CMYK

RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

वर्ष-10 अंक: 174 ता. 05 जनवरी 2022, बुधवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

पहला कॉलम

राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को 152.96 करोड़ से अधिक टीके प्रदान किये

नई दिल्ली । केंद्र सरकार देशभर में कोविड-19 टीकाकरण का दायरा विस्तृत करने और लोगों को टीके लगाने की गति को तेज करने के लिये प्रतिबद्ध है। कोविड-19 के टीके को सभी के लिए उपलब्ध कराने के लिए नया चरण 21 जून 2021 से शुरू किया गया था। टीकाकरण अभियान की रफ्तार को अधिक से अधिक टीके की उपलब्धता के जरिये बढ़ाया गया है। इसके तहत राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को टीके की उपलब्धता के बारे में पूर्व सूचना प्रदान की जाती है, ताकि वे बेहतर योजना के साथ टीके लगाने का बंदोबस्त कर सकें और टीके की आपूर्ति श्रृंखला को दुरुस्त किया जा सके। देशव्यापी टीकाकरण अभियान के हिस्से के रूप में केंद्र सरकार राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निःशुल्क कोविड टीके प्रदान करके उन्हें पूर्ण सहयोग दे रही है। टीके की सर्व-उपलब्धता के नये चरण में, केंद्र सरकार टीका निर्माताओं से 75 प्रतिशत टीके खरीदकर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निःशुल्क प्रदान करेगी। केंद्र सरकार द्वारा अब तक निःशुल्क और सीधे राज्य सरकार खरीद माध्यमों से टीके की 152.96 करोड़ से अधिक (1,52,96,00,055) खुराकें राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को उपलब्ध कराई गई हैं। अभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के पास कोविड-19 टीके की 19.69 करोड़ से अधिक (19,69,01,436) अतिरिक्त और बिना इस्तेमाल हुई खुराकें उपलब ध है, जिन्हें लगाया जाना है।

कांग्रेस प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला कोरोना से संक्रमित, बोले- संपर्क में आए लोग जल्द कराएं अपनी जांच

नेशनल डेस्क- कांग्रेस महासचिव रणदीप सुरजेवाला ने मंगलवार को कहा कि वह कोरोना वायरस से संक्रमित हो गए हैं। उन्होंने पिछले 24 घंटों के दौरान उनके संपर्क में आए लोगों से जांच कराने तथा जरूरी सावधानियां बरतने की अपील भी की है।कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता सुरजेवाला ने ट्वीट किया, ''बीती रात हल्का बुखार और सर्दी जैसे लक्षण दिखने के बाद मैंने अपनी जांच कराई और कोरोना से संक्रमित होने का पता चला। मैं पिछले 24 घंटों के दौरान अपने संपर्क में आए लोगों से आग्रह करता हूं कि वे जरूरी सावधानियां बरतें और अपनी जांच कराएं।

अब फिर पूरी क्षमता से चलेंगी मेट्रो-बसें यात्रियों के लिए मास्क पहनना होगा अनिवार्य

नई दिल्ली । दिल्ली सरकार ने राजधानी में कोरोना संक्रमण के बढ़ते हुए मामले को देखते हुए वीकेंड कर्फ्यू लगाने का ऐलान किया है। अब शुक्रवार रात 10:00 बजे से लेकर सोमवार सुबह 5:00 बजे तक सिर्फ जरूरी सेवाओं को छोड़कर बाकी सब कामों पर पाबंदी रहेगी। हालांकि, अब दिल्ली में मेट्रो और बसें फुल कैपेसिटी में चलेंगी। इस दौरान सभी यात्रियों का मास्क पहनना जरूरी होगा। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने मंगलवार को बताया कि बस स्टैंड और मेट्रो स्टेशन पर भीड़ से बचने के लिए दिल्ली में बसें और मेट्रो 100 प्रतिशत क्षमता के साथ चलेंगी, बिना मास्क के किसी को भी यात्रा करने की अनुमति नहीं होगी। सिसोदिया ने कहा कि सरकार का मानना है कि आधी क्षमता करने से बस स्टैंड और मेट्रो स्टेशन के बाहर लग रही लाइन से कोरोना वायरस का संक्रमण फैलने का खतरा अधिक हो सकता है। इसके साथ ही सरकार ने यह भी फैसला लिया है कि अब सरकारी कर्मचारी ऑनलाइन या वर्क फ्रॉम होम करेंगे। सिर्फ जरूरी सेवाओं से जुड़े विभागों के अधिकारी व कर्मचारी ही दफ्तर आएंगे और निजी कार्यालयों में भी 50% क्षमता से ही काम करेंगे। उन्होंने कहा कि दिल्ली में अभी 11 हजार अधिक एक्टिव कोविड केस हैं। इनमें 350 के करीब अस्पताल में भर्ती हैं, जिसमें 124 ऑक्सीजन बेड पर हैं।

पकड़ा गया ड्रैगन का झूठ

चीन ने नहीं भारत ने फहराया है गलवान घाटी में देश का तिरंगा

(एजेंसी)।

सुरक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों ने मंगलवार को नए साल के जश्न के हिस्से के रूप में पूर्वी लद्दाख में गलवान घाटी में एक बड़ा तिरंगा पकड़े भारतीय सेना के जवानों की तस्वीरें जारी कीं। तस्वीरों को केंद्रीय कानून मंत्री किरेन रिजिजू ने भी ट्विटर पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'नव वर्ष 2022 के अवसर पर गलवान घाटी में भारतीय सेना के बहादुर जवान।'चीन के सरकारी मीडिया द्वारा गलवान घाटी क्षेत्र के पास एक स्थान से चीनी लोगों को नए साल की बधाई भेजने वाले पीएलए सैनिकों का एक कथित वीडियो चलाने के तीन दिन बाद ये तस्वीरें जारी की गईं। भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों द्वारा जारी की गई तस्वीरों में से एक में करीब 30 भारतीय सैनिकों को राष्ट्र ध्वज के साथ देखा जा सकता है। एक अन्य तस्वीर में समूह को दिखाया गया है जिसमें चार लोग राष्ट्र ध्वज पकड़े हुए हैं और एक अन्य तिरंगा एक अस्थायी निगरानी चौकी से सटे ध्वजदंड पर लहरा रहा है। सूत्रों ने बताया कि यह तस्वीर गलवान घाटी में एक जनवरी को ली गई थी। भारतीय और चीनी सैनिकों ने एक जनवरी को पूर्वी लद्दाख और उत्तरी सिक्किम सहित वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के 10 सीमा बिंदुओं पर मिठाइयों और शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया, जिसे पूर्वी लद्दाख में जारी विवाद के बीच गर्मजोशी भरे संकेत के रूप में देखा गया था। चीन के सरकारी मीडिया ने हालांकि चीनी पीएलए द्वारा अपने देश का झंडा फहराए जाने की तस्वीरें जारी की थीं। यह ध्वज गलवान घाटी के निकट उनकी तरफ फहराया गया प्रतीत होता है। भारतीय सुरक्षा प्रतिष्ठान के सूत्रों ने कहा कि चीनी सैनिक जिस जगह नए साल का जश्न मना रहे थे वह गलवान घाटी क्षेत्र के पास चीन की तरफ एक अंदरुनी इलाका है और यह 15 जून को हुए घातक संघर्ष के बाद क्षेत्र में बनाए गए बफर जोन के करीब नहीं है।

पूर्वी लद्दाख में पैंगोंग झील के इलाके में पांच मई 2020 को दोनों देशों के बीच हुई हिंसक झड़प के बाद पूर्वी लद्दाख सीमा पर भारत और चीन की सेनाओं की बीच गतिरोध पैदा हो गया था। दोनों ही सेनाओं ने उस इलाके में अपने हजारों सैनिकों और भारी हथियारों की तैनाती की थी।

कुलगाम में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ ,

दो आतंकवादी ढेर

श्रीनगर (एजेंसी)।

दक्षिणी कश्मीर के कुलगाम जिले में मंगलवार को सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े समूह द रेजिस्टेंस फ्रंट के दो स्थानीय आतंकवादी मारे गये। पुलिस सूत्रों ने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना के आधार पर सेना , केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल और पुलिस ने कुलगाम के ओकेय गांव में आज सुबह घेराबंदी और तलाश अभियान शुरू किया। इसी दौरान वहां छुपे आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर गोलीबारी शुरू कर दी। जवाबी कारवाई में सुरक्षा बलों ने भी गोलियां चलायी। दोनों पक्षों के बीच चली मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गये। पुलिस महानिरीक्षक(कश्मीर रेंज) विजय कुमार के हवाले से पुलिस की ट्वीट में कहा गया, ''मृत आतंकवादी स्थानीय हैं और प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा/द रेजिस्टेंस फ्रंट से जुड़े थे। वे दोनों कई आतंकी गतिविधियों में शामिल थे।''

केन्द्रीय मंत्री गडकरी एवं सीएम धामी ने शहीद राज्य आंदोलनकारियों को दी श्रद्धांजलि

खटीमा (एजेंसी)।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी एवं मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंगलवार को खटीमा पहुंच शहीद स्मारक स्थल, खटीमा में उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन में शहीद हुए आंदोलनकारियों की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके बलिदान को याद किया। इस अवसर पर उनके साथ केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट, कैबिनेट मंत्री स्वामी यतीश्वरानंद, सांसद लॉकेट चटर्जी, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक एवं अन्य लोग मौजूद रहे।

पंजाब में आप का सीएम चेहरा हो सकते हैं भगवंत मान, केजरीवाल ने दी सहमति

चड़ीगढ (एजेंसी) ।

पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी पूरे दम खम से मैदान में उतार रही है।राज्य में अभी किसी भी पार्टी की तरफ से सीएम चेहरे को लेकर कोई सीधी घोषणा नहीं हुई है। लेकिन पंजाब की राजनीति में अपनी ग्रैंड मौजूदगी दर्ज कराने की कवायद में जुटी आप ऐसी पहली पार्टी होगी है, जो सूबे में मुख्यमंत्री चेहरे का ऐलान करने वाली है।रिपोर्ट्स के अनुसार पंजाब में भगवंत मान आम आदमी पार्टी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार हो सकते है। सूत्रों के हवाले से ये खबर सामने आ रही है।आप की पीएसी की बैठक में ये फैसला हुआ है, कि पंजाब में भगवंत मान के चेहरे को सामने रख आम आदमी पार्टी चुनावी मैदान में उतरेगी। सूत्रों के हवाले से कहा जा रहा है कि पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने भी भगवंत मान के नाम पर मुहर लगा दी है। कहा जा रहा है कि केजरीवाल के कोरोना संक्रमित आने की वजह से नाम के ऐलान में देरी की गई। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार केजरीवाल का पंजाब आने का और फिर एक ग्रैंड इवेंट के जरिये भगवंत मान के नाम का ऐलान करने का कार्यक्रम में देरी हो रही है। हालांक पंजाब की आप की मीडिया ईकाई पूरे मामले में चुप्पी साध रखी है और उनका कहना है कि जो भी फैसला होगा वहां पार्टी आलाकमान ही तय करेगा। केजरीवाल के साथ ही पीएसी के तमाम नेता, राघव चड्ढा और जरनैल सिंह जैसे सह प्रभारी और लगातार पंजाब में कैंपेन कर रहे मनीष सिसोदिया जैसे नेताओं को लगता है कि पंजाब की राजनीति में अभी भगवंत नाम ही एक बड़ा नाम है, जिसके चेहरे को आगे रखकर चुनाव लड़ा जा सकता है।पंजाब के संगरूर से लोकसभा के सांसद हैं।वहां लगातार दो बार सीट का प्रतिनिधित्व संसद में कर रहे हैं। राजनीति में आने से पहले भगवंत मान लोकप्रिय हास्त कलाकार रह चुके हैं। उन्होंने अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत मनप्रीत बादल की पंजाब पीपल्स पार्टी से की थी लेकिन बाद में आम आदमी पार्टी ज्वाइन कर ली।

हम पूर्वोत्तर में संभावनाओं को साकार करने के लिए काम कर रहे हैं: पीएम मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इंफाल, मणिपुर में आज लगभग 1,850 करोड़ रुपये की 13 परियोजनाओं का उद्घाटन किया और करीब 2,950 करोड़ रुपये की 9 परियोजनाओं का शिलान्यास किया। ये परियोजनाएं सड़क अवसंरचना, पेयजल आपूर्ति, स्वास्थ्य, शहरी विकास, आवासन, सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल विकास, कला और संस्कृति जैसे विविध क्षेत्रों से संबंधित हैं। प्रधानमंत्री ने 1700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से निर्माण की जाने वाली पांच राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी। उन्होंने 75 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से एनएच-37 पर बराक नदी पर बने स्टील ब्रिज का उद्घाटन किया, जो सिलचर और इंफाल के बीच यातायात को आसान बनाएगा। उन्होंने लगभग 1100 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किए गए 2,387 मोबाइल टॉवरों को भी मणिपुर के लोगों को समर्पित किया। प्रधानमंत्री ने 280 करोड़ मूल्य की 'थौबल बहुउद्देश्यीय परियोजना की जल प्रवाह प्रणाली' का उद्घाटन किया, जिससे इंफाल शहर में पेयजल की आपूर्ति होगी। प्रधानमंत्री ने 65 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित जल आपूर्ति योजना और 51 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 'सेनापति जिला मुख्यालय जलापूर्ति योजना का विस्तार' परियोजना का भी उद्घाटन किया, जिनसे क्रमशः तामेंगलोंग जिले की दस बस्तियों के निवासियों को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जायेगा तथा उस क्षेत्र के निवासियों को नियमित जल आपूर्ति प्रदान की जाएगी। प्रधानमंत्री ने इंफाल में लगभग 160 करोड़ रुपये की लागत से पीपीपी आधार पर निर्माण किए जाने वाले 'अत्याधुनिक कैंसर अस्पताल' का शिलान्यास किया। उन्होंने कियामगेई में '200 बिस्तरों वाले कोविड अस्पताल' का उद्घाटन किया, जिसे डीआरडीओ के सहयोग से लगभग 37 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित किया गया है।

कोरोना कहर तेज, महाराष्ट्र में लाकडाउन की आशंका, दिल्ली में बढ़ी सख्ती

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

दुनिया में कोकोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के बढ़ने के बाद भारत में भी इसके संक्रमण ने रफ्तार पकड़ ली है। देश में कोरोना के बढ़ते मामलों के चलते एक बार फिर से पाबंदियों का दौर शुरू हो चुका है। राजधानी दिल्ली में ही लगातार बढ़ते कोरोना मामलों के मद्देनजर पाबंदियों को फिर कड़ा किया गया है। इसके तहत वीकेंड लाकडाउन लगाया गया है। साथ ही सरकारी दफ्तरों में वर्क फ्राम होम लागू किया गया है वहीं निजी दफ्तरों में कर्मियों की उपस्थिति को पचास फीसद रखा गया है। मुंबई में भी कोरोना के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। इसको देखते हुए मुंबई की मेयर किशोरी पेडनेकर ने साफ कर दिया है कि यदि मामले 20 हजार के ऊपर गए तो लाकडाउन लगा दिया जाएगा। यहां महामारी की वजह से कुछ समय पहले खुले स्कूलों को फिर से बंद किया जा रहा है। महाराष्ट्र में बढ़ते मामलों के चलते एक बार फिर से स्कूलों को बंद करना पड़ा है। एक छात्र की मां ने बताया कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि स्कूल बंद कर दिया गया है। स्मार्टफोन न होने की वजह से उनका बेटा आनलाइन वे लासेस नहीं कर पाता है। इससे उसकी पढ़ाई का नुकसान हो रहा है।

दिल्ली में पहले से ही बढ़ती ठंड और कोरोना के बढ़ते मामलों की वजह से स्कूलों को बंद किया जा चुका है। दिल्ली में ओमिक्रोन के बढ़ते मामले भी इसकी एक वजह बने हैं। देश में जिस तरह से कोरोना के मामले बढ़ रहे हैं उसमें इसके नए वैरिएंट ओमिक्रोन का भी हाथ शामिल है।

'यूपी नंबर वन' के नारे के साथ भाजपा वोटरों का डाटा इकट्ठा करने में जुटी

-वाराणसी के हर वार्डो में घुमा रही है सुझाव पेटिका

वाराणसी (एजेंसी) ।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले भाजपा 'यूपी नंबर वन' के नारे के साथ भाजपा वोटरों का डाटा इकट्ठा करने में जुटी है। अधिसूचना जारी होने से पहले सभी पार्टियां अपने प्रचार प्रसार में कोई कसर नहीं छोड़ना चाह रही है। ऐसे में भाजपा सरकार उत्तर प्रदेश में अपनी सत्ता बरकरार रखने को हर संभव प्रयास कर रही है, कभी विकास के सौगात, कभी जनविश्वास यात्रा, तो कभी पिछड़ा मोर्चा सम्मेलन के तहत बीजेपी अपना वोट बैंक बढ़ाने की पूरी कोशिश कर रही है। इसी क्रम में भाजपा द्वारा बनारस के हर गली और चौराहों पर एक शिकायत और सुझाव पेटी रखी जा रही है, इन पेटियों में जनता अपनी शिकायतें एवं जरूरतों के सुझाव की पर्ची डाल सकती है। 'यूपी नंबर वन'के नारे के साथ भाजपा वोटरों का डाटा इकट्ठा करने में लगी हुई है, कभी प्रसाद के डब्बे के साथ लोगो के फोन नंबर और नाम की जानकारी मांगी जा रही है, तो कभी इन सुझाव पेटिका के जरिए, वोटरों का डाटा इकट्ठा किया जा रहा है। इन पेटिकाओं से मिली समस्याओं और सुझाव की जानकारी और डाटा के आधार पर बीजेपी अपना चुनावी मैनिफेस्टो तैयार करेगी। इन सुझाव पेटिका को जन जन तक पहुंचाने के लिए भाजपा ने अपने कार्यकर्ताओं को ड्यूटी दे दी है, और हर वार्ड में एक पेटिका प्रभारी को भी नियुक्ति की गई है। इन पेटिकाओं को हर एक वार्ड के एक एक मुहल्ले में रखा जाएगा, और लोगो से उनकी सुझाव और समस्याएं पर्चियों पर भरवा कर उनके फोन नंबर भी लिखवाए जायेंगे।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला 5 को पुनर्विकसित सोगरिया रेलवे स्टेशन का लोकार्पण करेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी) ।

अध्यक्ष लोकसभा ओम बिरला 5 जनवरी 2022 को प्रातः 11:30 बजे पुनर्विकसित सांगरिया रेलवे स्टेशन का लोकार्पण करेंगे। इस कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि रेल एवं वस्त्र राज्यमंत्री भारत सरकार दर्शना जरदोश एवं माननीय सांसदगण एवं विधायकगण भी उपस्थित रहेंगे। अध्यक्ष लोक सभा के कर कमलों द्वारा एवं मंत्री के विशिष्ट अतिथि में पुनर्विकसित सोगरिया रेलवे स्टेशन, कोटा, बूंदी, डकनिया तलाव और रामगज मंडी रेलवे स्टेशनों पर विभिन्न यात्री सुविधाओं का लोकार्पण किया जायेगा। साथ ही कोटा-बीना-कोटा, कोटा-झालावाड़ सिटी,कोटा-नागदा मेमू ट्रेनों का शुभारम्भ कर हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। पुनर्विकसित सांगरिया रेलवे स्टेशन अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित सौंदर्यीकृत राजस्थानी कला स्तर का पश्चिम मध्य रेल का महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन है सोगरिया कोटा शहर के पास स्थित है। पम्परे में कोटा मण्डल के सोगरिया स्टेशन को रेलवे और आरवीएनएल द्वारा सांस्कृतिक विरासत और स्थानीय कलाओं को अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त अद्भुत सौंदर्य को आत्मसात करने के उद्देश्य से पुनर्विकसित किया गया। इस नव विकसित स्टेशन का अग्रभाग बहुत सुंदर है जो स्टेशन निर्माण में प्रयुक्त विभिन्न तत्वों के माध्यम से राजस्थानी कला और संस्कृति धरोहर को प्रदर्शित करता है। पश्चिम मध्य रेल में कोटा मंडल के कोटा, बूंदी, डकनिया तलाव एवं रामगंज मण्डी रेलवे स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं का विस्तार करते हुए विभिन्न प्रकार के ट्रेन इन्फॉर्मेशन डिसप्ले बोर्ड भी लगाये गये है। यह सभी डिसप्ले बोर्ड पूर्णतः डिजिटली और आईपी आधारित प्रणाली के हैं। ये बोर्ड अधिक दृश्यता एंगल और लाइफ के साथ एनर्जी सेविंग एलईडी लाइट से युक्त है। साथ ही पश्चिम मध्य रेल के कोटा मण्डल में कोटा-बीना-कोटा, कोटा-झालावाड़ सिटी-कोटा एवं कोटा नागदा-कोटा तीन नई मेमू ट्रेनों को भी हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाएगा।

प्रदेश में सड़क निर्माण से सम्बंधित परिवहन मंत्री ने की विभिन्न घोषणाएं

एक साल के अंदर रोड से जा सकेंगे कैलाश मानसरोवर यात्रा पर: नितिन गडकरी

रूद्रपुर।

केन्द्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकारी ने थारू राजकीय इण्टर कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में कहा कि उत्तराखंड के बारे में पूरे देश में कहा जाता है कि यह देवों की भूमि है। देश-विदेश की जनता उत्तराखंड को देव भूमि और राज्य की जनता को देव तुल्य मानती है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री यह हमारे आस्था, श्रद्धा के प्रतीक है। उन्होने कहा कि यहां केवल उत्तराखंड के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया से लोग आते है। हमारी पवित्र गंगा का उद्गम स्थान भी उत्तराखंड में है और मेरा यह सौभाग्य रहा है गंगा को अविरल और निर्मल करने की जिम्मेदारी मुझे मिली और उसका मेरे द्वारा 25000 करोड़ रुपए के अविरल निर्मल गंगा के लिए नमामि गंगे प्रोजेक्ट में कार्य किया जा रहा है जिसका 80 प्रतिशत कार्य मेरे कार्यकाल में पूरा हुआ। उन्होंने बताया कि जब-जब उत्तराखंड में पार्टी अध्यक्ष के रूप में आता था सब यही कहते थे कि हमारे रोड सुधर जाएंगे तो उत्तराखंड का विकास होगा। अमेरिका प्रेसिडेंट जॉन कैनेडी ने कहा था अमेरिका अमीर है इस कारण सड़कें अच्छी नहीं हैं बल्कि यहां की सड़कें अच्छी हैं जिसकी वजह से देश अमीर है। जब मुझे पीएम मोदी के नेतृत्व में रोड एवं परिवहन मंत्रालय मिला तो मैंने तय किया था कि उत्तराखंड को मैं दो लाख करोड़ रुपए दूंगा अभी तक आपने जो विकास देखा है वह एक ट्रेलर था फिल्म अभी शुरू होनी बाकी है। मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि 2014 से 2021 तक हमने 21 सौ किलोमीटर की नई सड़क बनाई है और उसका मजबूतीकरण का काम किया है। उन्हों ने बताया कि 2022 में 123 किलोमीटर सड़क उन्यन का काम अवॉर्ड हो जाएगा और करीब 1353 किलोमीटर सड़क में कर्ण का कार्य होगा। उन्होंने कहा कि 2024 तक 2500 किलोमीटर का काम पूरा करके दो लाख करोड़ का काम पूरा करेंगे। खटीमा आने वाले समय में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, यह क्षेत्र आने वाले समय में विश्व मानचित्र पर होगा। उन्होंने कहा कि कैलाश मानसरोवर यात्रा जाने वाले इसी रास्ते से जाते हैं और मैं आपको विश्वास देता हूं आज से 1 साल के अंदर कैलाश मानसरोवर यात्रा पर आप सब रोड से जा सकोगे, रोड मैं आपको बना कर दूंगा। उन्होंने कहा कि टनकपुर से

पिथौरागढ़ तक कनेक्टिविटी हो गई है, पिथौरागढ़ से लिपुलेख तक सड़क निर्माण का कार्य अभी चल रहा है, टनकपुर से लिपुलेख एक सड़क निर्माण कार्य हो रहा है यह 376 का किलोमीटर है और इस पर 5000 करोड़ रूपया खर्च कर रहे हैं, यहां से सीधा मानसरोवर जा सकेंगे।

योगी का अखिलेश पर तंज, जब सत्ता में थे तब वृंदावन, बरसाना और गोकुल के लिए कुछ नहीं किया

अलीगढ़ ।

भगवान कृष्ण सपने में आकर कहते हैं, कि तुम्हारी सरकार बनने वाली है। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव के दावों पर यूपी के मुख्यमंत्री योगी जवाब देकर तंज कसा है।योगी ने कहा कि अखिलेश जब सत्ता में थे,तब उन्होंने मथुरा, वृंदावन, बरसाना और गोकुल के लिए कुछ नहीं किया। योगी ने सपा नेता को कंस का उपासक बताकर कहा कि उनके पैदा किए 'कंस ने जवाहरबाग की घटना को अंजाम दिया था। मुख्यमंत्री योगी ने अलीगढ़ में 7,000 करोड़ रुपए की लागत की 660 मेगावाट की हरदुआगंज तापीय विद्युत परियोजना का लोकार्पण कर कहा, आज जब हम इस पावर प्रॉजेक्ट का लोकार्पण कर रहे हैं। कुछ लोगों को लखनऊ में सपने आ रहे होंगे। और उनके सपने में भगवान कृष्ण आकर कह रहे होंगे कि अपने नाकामयाबियों पर अब तो रो जाओ, जो तुम नहीं कर पाए वह बीजेपी की सरकार ने कर दिया है।'भगवान कृष्ण उन्हें कोस रहे होंगे, भगवान कृष्ण ने उन्हें कहा होगा कि जब तुम्हें सत्ता मिली थी तब मथुरा, वृंदावन, गोकुल के लिए कुछ नहीं कर सके। लेकिन वहां कंस पैदा करके जवाहर बाग की घटना जरूर करवा दिए थे।

ये हरकतें थी पिछली सरकार की। उन्हें भगवान कृष्ण से मतलब नहीं था। वे कंस के उपासक थे और कंस ही पैदा करते थे। और जब कंस पैदा होते थे,तब जवाहरबाग की घटना भी होती थी, जिसमें एसपी सिटी मुकुल द्विवेदी शहीद हुए थे।दरअसल अखिलेश यादव ने कहा कि भगवान कृष्ण हर रोज उनके सपने में आकर कहते हैं कि सपा की सरकार बनने जा रही है। अखिलेश ने दावा किया कि ऐसा कोई दिन नहीं होता जब भगवान उनके सपने में ना आएं। बीजेपी के राज्यसभा के सदस्य हरनाथ सिंह यादव की ओर से 'कृष्ण की प्रेरणा से नड्डा को खत लिखकर' योगी को मथुरा से चुनाव लड़वाने की अपील को लेकर पूछे गए सवाल पर अखिलेश ने पत्रकारों से कहा, ''रात में हमारे सपने में आए भगवान। कह रहे थे आपकी सरकार बनने वाली है। एक बार नहीं आए, हर दिन आते हैं। हर दिन, कोई दिन ऐसा नहीं, जिस दिन भगवान हमारे सपनों में आकर ना कहते हों कि आपकी सरकार बनने जा रही है। इनके तो पत्र में लिखा है, हमारे सपनों में हर दिन आते हैं।

जदयू प्रदेश कार्यालय में कोरोना का विस्फोट दो गार्ड समेत पांच संक्रमित मिले

नई दिल्ली । बिहार में सत्तारूढ़ जनता दल यूनाइटेड (जदयू) के प्रदेश कार्यालय में कोरोना का विस्फोट हुआ है। यहां दो गार्ड समेत पांच की रिपोर्ट पॉजिटिव आने से खलबली मची है। कार्यालय के मुख्य प्रवेश द्वार को बंद कर दिया गया है। जदयू के मुख्यालय प्रभारी एवं उपाध्यक्ष डॉ. नवीन कुमार आर्य ने मंगलवार को यहां बताया कि कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए एहतियात के तौर पर यह कदम उठाया गया है। मुख्य प्रवेश द्वार को बंद करने के साथ ही आवश्यक कार्य से आने वाले लोगों को कोरोना की जांच के बाद ही कार्यालय में प्रवेश की अनुमति दी जा रही है। आर्य ने बताया कि पार्टी के चिकत्सिा प्रकोष्ठ की ओर से मुख्यालय परिसर में ही कोरोना जांच की व्यवस्था की गई है। इससे पार्टी मुख्यालय में आने वाले लोगों की तत्काल जांच की जा रही है। कार्यालय में उपस्थित संबंधित सभी कर्मचारियों की भी करोना जांच कराई गई है। उल्लेखनीय है कि बिहार में पिछले तीन से चार दिनों में कोरोना के मामलों में अचानक वृद्धि हुई है। पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी और उनके परिवार के 18 लोग एवं सहयोगी भी करोना संक्रमित पाए गए थे। इस बीच, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार आज शाम करोना को लेकर बैठक करने वाले हैं। इसमें इससे बचाव को लेकर समीक्षा की जाएगी। मिनी लॉकडाउन लगाने की भी आशंका जताई जा रही है।

कॉर्डेलिया क्रूस शिप पर कोरोना बम फूटा, 66 यात्रियों की रिपोर्ट पॉजिटिव

गोवा । बॉलीवुड स्टार शाहरूख खान बेटे आर्यन खान के केस से चर्चा में आए कॉर्डेलिया क्रूज कोरोना का केंद्र बन गया। क्रूज पर सवार 66 यात्रियों की रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। दरअसल, इसी क्रूज पर रेव पार्टी के दौरान एनसीबी की छापेमारी में आर्यन खान अपने दोस्त अरबाज मर्चेंट और मुनमुन धमेचा के साथ पकड़े गए थे। मामला सामने आने के बाद क्रूज चर्चा का विषय बन गया था। सारी सुविधाओं से लैस कॉर्डेलिया क्रूज शिप अंदर से एक आलीशान होटल का तरह है। कॉर्डेलिया क्रूज शिप 66 कोरोना पॉजिटिव को लेकर गोवा से मुंबई के लिए रवाना हो गई है। क्रूज पर कोरोना पॉजिटिव के साथ निगेटिव यात्री भी हैं जिन्होंने मदद मांगते हुए मुद्दे को सामने लाने की मांग की है।क्रूज पर सवार जसवीर सिंह अपने बेटा-बेटी और भाई के साथ सवार हैं। जसवीर ने बताया कि वे इस चिंता में हैं कि हमारा क्या होगा। उन्होंने बताया कि चालक दल समेत जब 66 लोगों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आई तो हमें (जिनकी रिपोर्ट निगेटिव है) गोवा में क्यों नहीं उतरने दिया गया। गोवा में ही कोविड पॉजिटिव मरीजों को क्वारंटाइन या आइसोलेशन वार्ड में क्यों नहीं ले जाया गया? अगर रास्ते में पॉजिटिव मरीजों को इलाज की जरुरत होगी तो उन्हें कौन देखेगा?

अब तक 146.70 करोड़ को लगे टीके, 24 घंटों में 37,379 नए रोगी सामने आए

नई दिल्ली ।

पिछले 24 घंटों में लगभग 1 करोड़ (99,27,797) वैक्सीन की खुराक देने के साथ ही भारत का कोविड-19 टीकाकरण कवरेज आज सुबह 7 बजे तक अंतिम रिपोर्ट के अनुसार 146.70 करोड़ (146,70,18,464) से अधिक हो गया। इस उपलब्धि को 1,57,38,732 टीकाकरण सत्रों के जरिये प्राप्त किया गया है। पिछले 24 घंटों में 11,007 रोगियों के ठीक होने के साथ ही स्वस्थ होने वाले मरीजों (महामारी की शुरुआत के बाद से) की कुल संख्या बढ़कर 3,43,06,414 हो गई है। भारत में स्वस्थ होने की दर 98.13 प्रतिशत है। केंद्र और राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा निरंतर और सहयोगात्मक रूप से किए जा रहे प्रयासों के फलस्वरूप पिछले 190 दिनों से लगातार 50,000 से कम दैनिक नए कोविड मामले दर्ज किए जा रहे हैं। पिछले 24 घंटे में 37,379 नए मरीज सामने आए हैं। वर्तमान में 1,71,830 सक्रिय रोगी हैं। वर्तमान में ये सक्रिय मामले देश के कुल पुष्टि वाले

मरीजों का 0.49 प्रतिशत हैं। देश भर में जांच क्षमता का विस्तार लगातार जारी है। पिछले 24 घंटों में कुल 11,54,302 जांच की गई हैं। भारत ने अब तक कुल 68.24 करोड़ (68,24,28,595) जांच की गई हैं। देश भर में जांच क्षमता को बढ़ाया गया है, साप्ताहिक पुष्टि वाले मामलों की दर 2.05 प्रतिशत है, दैनिक रूप से पुष्टि वाले मामलों की दर 3.24 प्रतिशत है।

कोविड-19 एंटीवायरल दवा मोलनुपिरवीर जल्द लांच होगी, 35 रुपये प्रति कैप्सूल कीमत

नई दिल्ली ।

मैनकाइंड फार्मा इस सप्ताह सबसे सस्ती 35 रुपये प्रति कैप्सूल की कोविड-19 एंटीवायरल दवा मोलनुपिरवीर लांच करने के लिए तैयार है।इसकी जानकारी कंपनी के चेयरमैन ने दी।रिपोर्ट के अनुसार मैनकाइंड फार्मा के चेयरमैन आरसी जुनेजा ने बताया कि मोलुलाइफ के पूरे इलाज पर 1,400 रुपये खर्च होने की उम्मीद है।उन्होंने कहा कि इस सप्ताह बाजार में ब्रांड के आने की उम्मीद है।एक मरीज के लिए मोलनुपिरवीर पांच दिन तक हर दिन में दो बार 800 मिलीग्राम रेकमेंड की गई है।इसके बाद एक मरीज को 200 मिलीग्राम खुराक के तौर पर 40 कैप्सूल लेने की जरूरत है। ओरल पिल की मैन्यूफैक्चरिंग 13 भारतीय दवा कंपनियों द्वारा हो रहा हैं। जिनमें टोरेंट,सिप्ला, सन फार्मा,डॉ रेड्डीज, नैटको ,माइलान और हेटेरो शामिल हैं। बता दें मैनकाइंड फार्मा देश में कोरोना की दवा मोलुलाइफ (मॉलनुपिरेविर) की पेशकश के लिए बीडीआर फार्मास्युटिकल्स के साथ साझेदारी की है।बीते दिनों कंपनी ने कहा था कि साझेदारी के तहत

बीडीआर फार्मा द्वारा उत्पादन किया जाएगा, जबकि विपणन, बिक्री, प्रचार, वितरण मैनकाइंड फार्मा करेगी।मैनकाइंड फार्मा के वरिष्ठ अध्यक्ष (बिक्री और विपणन) ने कहा था कि कंपनी कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई को मजबूत करने के लिए हरसंभव कदम उठाएगी और इस क्रम में मोलुलाइफ को हर जगह उपलब्ध कराया जाएगा।भारतीय दवा महानियंत्रक (डीसीजीआई) ने कोविड-19 के इलाज में उपयोगी एंटीवायरल दवा मॉलनुपिरेविर के देश में आपात उपयोग की मंजूरी दी थी।बता दें मोलनुपिरवीर की सुरक्षा का आकलन करने के लिए 1,000 मरीजों पर इसका ट्रायल किया जाएगा। भारत के ड्रग रेगुलेटर की तरफ से जारी दवा के निर्माण और मार्केटिंग की अनुमति वाले पत्र में कहा गया कि तीन महीने के अंदर क्लीनिकल ट्रायल की अपडेट डिटेल देनी होगी।इसमें एक शर्त यह भी है कि, पोस्ट मार्केटिंग सर्विलांस के रूप में,कंपनियों को ड्रग रेगुलटर के सामने समय-समय पर सेफ्टी अपडेट रिपोर्ट पेश करनी होगी।इसके अलावा कंपनियों को स्थिरता पर भी स्टडी जारी रखने के लिए कहा गया है।

भारतीय विद्युत प्रणाली की हर स्थिति का सामना करने की क्षमता में सुधार के लिये एजीसी अहम: ऊर्जा मंत्री आर.के.सिंह

नई दिल्ली । विद्युत तथा नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री आर.के.सिंह ने सोमवार को ऑटोमेटिक जेनरेशन कंट्रोल (एजीसी) राष्ट्र को समर्पित किया। इस प्रणाली से आशा की जाती है कि वह 2030 तक 500 गीगावॉट की गैर-जीवाश्म आधारित ईंधन क्षमता का महत्ते वाकांक्षी लक्ष्य हासिल करने में सहायक होगी। एजीसी का संचालन पावर सिस्टम ऑपरेशन कॉरपोरेशन (पॉसोको) द्वारा राष्ट्रीय भार प्रेषण केंद्र के जरिये किया जा रहा है। एजीसी के माध्यम से पॉसोको विद्युत प्रणाली की निरंतरता और विश्वसनीयता कायम रखने के लिये हर चार सेकंड पर बिजली संयंत्रों को संकेत भेजता है। 5वें पॉसोको दिवस पर आर.के. सिंह ने कहा कि भारत बड़े पैमाने वाले परिवर्तनीय और सविराम नवीकरणीय स्रोतों के एकीकरण के लिये तैयार है। इसके अलावा एजीसी निरंतरता नियंत्रण कायम रखने वाले प्रमुख माध्यमों में से एक है। श्री सिंह ने कहा कि पॉसोको के एजीसी परियोजना के तहत अब तक पांचों क्षेत्रों में 51 गीगावॉट की बिजली पैदावार क्षमता चालू हो गई है। यह भारतीय विद्युत प्रणाली की हर स्थिति का सामना करने की क्षमता में कई गुना सुधार लाने के लिये महत्ते वपूर्ण पड़ाव है। एजीसी के जरिये राष्ट्रीय भार प्रेषण केंद्र विद्युत प्रणाली की निरंतरता और विश्वसनीयता कायम रखने के लिये हर चार सेकंड पर 50 बिजली संयंत्रों को संकेत भेजता है। इसके जरिये परिवर्तनीय और सविराम नवीकरणीय ऊर्जा की पैदावार को स्वमेव निरंतरता नियंत्रण जैसे अधिक कारगर तरीके से सुनिश्चित किया जा सकेगा। आर.के. सिंह ने ÷असेसमेंट ऑफ इनर्शा इन इंडियन पॉवर सिस्टम÷ (भारती विद्युत प्रणाली में जड़ता का मूल्यांकन) नामक रिपोर्ट भी जारी की, जिसे आईआईटी, बॉम्बे के सहयोग से पॉसोको ने तैयार किया है। भारत में नवीकरणीय ऊर्जा के एकीकरण के भारी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुये पॉसोको ने आईआईटी, बॉम्बे के साथ एक अध्ययन की शुरुआत की थी, ताकि विद्युत प्रणाली की जड़ता का अनुमान (जहां रोटेटिंग जेनरेटरों में ऊर्जा का भंडार होता है), पैमाइश और निगरानी के क्षेत्र में दुनिया भर के बेहतर तौर-तरीकों का जायजा लिया जा सके। इस अध्ययन के तहत भारतीय विद्युत प्रणाली के संदर्भ में एक व्यवस्था भी तैयार करने का लक्ष्य था।

भारतीय भाषाओं में साहित्य का अनुवाद अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध कराया जाय: नायडू

नई दिल्ली ।

उपराष्ट्रपति एम.वेंकैया नायडू ने आज कहा कि देश की नई शिक्षा नीति, महात्मा गांधी की ÷नई तालीम ÷ का अनुकरण करती है। नई शिक्षा नीति में भी प्राथमिक या माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रखने का प्रस्ताव किया गया है तथा विद्यार्थियों में उद्यमिता बढ़ाने के लिए कौशल प्रशिक्षण पर जोर दिया गया है। स्मरण रहे 1937 में वर्धा में ही जिस ÷ नई तालीम÷ का प्रस्ताव महात्मा गांधी द्वारा किया गया था उसमें निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा के अतिरिक्त मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना और विद्यार्थियों को कौशल प्रशिक्षण देना सम्मिलित था। उपराष्ट्रपति नायडू आज वर्धा स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के रजत जयंती समारोह को ऑनलाइन आभासी रूप से संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा गांधी जी की ÷नई तालीम÷, उसके अनुभवों पर किया गया शोध और अध्ययन, शिक्षा नीति के निर्माताओं के लिए उपयोगी हो सकते हैं। नायडू ने कहा कि हमारी संविधान सभा ने लंबी बहस के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तथा साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं को भी आठवीं अनुसूची में संवैधानिक दर्जा दिया। उन्होंने कहा कि हर भारतीय भाषा का गौरवशाली इतिहास है, समृद्ध साहित्य है, ÷हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में भाषाई विविधता है। हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है क्योंकि हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक एकता को अभिव्यक्त करती हैं ।÷ इस संदर्भ में उपराष्ट्रपति ने युवा छात्रों से संप्रदाय, जन्म, क्षेत्र, लैंगिक विभेद, भाषा आदि भेदभावों से ऊपर उठकर देश की एकता को मजबूत करने का आग्रह किया।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि महात्मा गांधी के लिए भाषा का प्रश्न, देश की एकता का सवाल था। उनका मानना था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है। इस क्रम में उन्होंने हिंदी को आम जनता के लिए सरल और सुगम बनाने का आग्रह किया जिससे हिंदी का बहुतायत प्रचलन बढ़ सके। उपराष्ट्रपति ने कहा कि हिंदी के प्रति आग्रह के बावजूद भी महात्मा गांधी हर नागरिक के लिए उसकी मातृभाषा की संवेदनशीलता समझते थे। उन्होंने मातृभाषा को स्वराज से जोड़ा। महात्मा गांधी मानना था कि स्वराज का अर्थ ये नहीं है कि किसी पर कोई भाषा थोपी जाए। सबसे पहले मातृभाषा को ही महत्व दिया जाना चाहिए। असली अभिव्यक्ति तो मातृभाषा में ही हो सकती है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि एक सभ्य समाज से यही अपेक्षित है कि उसकी भाषा सौम्य, सुसंस्कृत और सृजनशील हो। उन्होंने विश्वविद्यालयों से अपेक्षा की कि वे यह संस्कार डालें कि साहित्य लेखन से समाज में सभ्य संवाद समृद्ध हो, ना कि विवाद पैदा हो। ÷हम अपनी अभिव्यक्ति की आज़ादी को भाषा की मर्यादा और समाज के अनुशासन में रह कर प्रयोग करें। उपराष्ट्रपति ने कहा कि ÷ डा. अंबेडकर, आजीवन शिक्षा और समता के लिए प्रतिबद्ध रहे। उनके जीवन संघर्ष में शिक्षा ने ही उनका मार्गदर्शन किया।

संक्षिप्त समाचार

यूपी में मंगलवार को कोविड के 992 नए मामले सामने आए

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में मंगलवार को कोविड के 992 नए मामले सामने आए, पिछले दिन के मुकाबले ये 42 प्रतिशत ज्यादा रहे हैं। सोमवार को यूपी में 572 कोरोना केस मिले थे। यूपी में कोविड संक्रमण के एक्टिव केस 3178 तक पहुंच गए हैं। पिछले 24 घंटे में एक भी मरीज की मौत नहीं हुई है। यूपी में पिछले 24 घंटे में 1.66 लाख सैंपल की जांच की गई है। जीनोम सीक्वेंसिंग का काम तेज कर दिया गया है और नतीजे लगातार मिल रहे हैं। उत्तर प्रदेश में अभी तक 26 ओमिक्रॉन के मरीज आधिकारिक तौर पर मिले हैं। यूपी उन पांच राज्यों में शामिल है, जहां विधानसभा चुनाव अगले कुछ माह के भीतर होने हैं। यूपी में बीजेपी, सपा, कांग्रेस और अन्य दलों की लगातार ताबड़तोड़ रैलियां और कार्यक्रम हो रहे हैं। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी की लड़की हूं लड़ सकती हूं कार्यक्रम के तहत मैराथन दौड़ में भी भारी भीड़ देखी गई। वहीं यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मंगलवार को देवबंद में चुनावी रैली की।

परमिशन नहीं होने के कारण मुरादाबाद में औवैसी को होटल में कमरा नहीं मिला

मुरादाबाद । एआईएमआईएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी को मुरादाबाद के होटल में रुकने के लिए कमरा नहीं मिला। होटल झइव इन 24 में उनकी पार्टी के लोग जब पहुंचे और पहले से बुक कमरों के बारे में बताया,तब औवैसी का नाम आने पर होटल वालों ने परमिशन लाने को कहकर रूम नहीं दिया। ओवैसी की जनसभा मंगलवार को मुरादाबाद जिले में कुंदरकी विधानसभा क्षेत्र में होनी है, जहां वर्तमान में काफी लोग मौजूद हैं, अभी ओवैसी जनसभा को संबोधित करने नहीं पहुंचे हैं। उधर होटल के मैनेजर विपुल ने बताया कि नियमानुसार राजनीतिक व्यक्तियों के लिए परमिशन आवश्यक है। जब परमिशन मुझे मिल जाएगी,तब मैं रूम देने के लिए तैयार हूं। किसी व्यक्ति विशेष को लेकर कमर ना देने जैसी कोई बात नहीं है। हम लोग नियम कानून के तहत ही काम करते हैं। औवैसी को कमरे ना मिलने की बात को ट्विटर पर भी कुछ लोगों ने ट्वीट किया इसके बाद यह चर्चा का विषय बन गया।इसके पहले ओवैसी ने गुजरात की साबरमती जेल में बंद बाहुबली अतीक अहमद के बेटे अली अहमद के साथ प्रस्तावित जनसभा को स्थगित कर दिया था। यह जनसभा 9 जनवरी को प्रयागराज में होने वाली थी, लेकिन इस बीच अली अहमद के खिलाफ गंभीर धाराओं में एफआईआर दर्ज हुआ है, जिसके बाद ओवैसी ने ऐलान किया।

इलाहाबाद हाई कोर्ट ने कहा, मामलों की सुनवाई के लिए हाइब्रिड तकनीक का इस्तेमाल होगा

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मंगलवार को फैसला किया है कि वह मामलों की सुनवाई के लिए हाइब्रिड तकनीक का उपयोग करेगा, जिसमें वकीलों के पास वीडियो कांफ्रेंस के जरिए पेश होने का विकल्प होगा। इससे पहले, उच्च न्यायालय ने फैसला किया था कि सभी अदालतें पहले के जैसे काम करेंगी,इसकारण सोमवार को वकीलों ने विरोध किया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल आशीष गर्ग द्वारा जारी व्यवस्थाओं में यह स्पष्ट किया गया है कि अदालतों में सुनवाई के लिए सीमित संख्या में केवल नए मामले सूचीबद्ध किए जाएंगे। अधिसूचना में कहा गया है, मुख्य न्यायाधीश के आदेश के अधीन, पुराने और निर्थक मामलों को अग्रिम नोटिस के साथ वाद (मामले) को सूचीबद्ध किया जाएगा है।इसके अलावा, हिरासत में लिए गए अभियुक्तों की जमानत याचिकाओं/अपीलों और बंदी वाली याचिकाओं को सूचीबद्ध किया जाएगा। रजिस्ट्रार जनरल ने कहा कि जिन मामलों में एक तारीख तय की गई है, उन्हें उस विशेष तारीख पर सूचीबद्ध किया जाएगा। अधिवक्ताओं की सीमित संख्या को कोर्ट रूम में प्रवेश की अनुमति होगी और शेष अधिवक्ता, जिनके मामले सूचीबद्ध हैं, कोर्ट रूम के बाहर अपनी बारी का इंतजार करना होगा और साथ ही कोविड प्रोटोकॉल का पालन करना होगा। हालांकि, रजिस्ट्रार जनरल ने वकीलों को सलाह दी कि वे अदालतों में भीड़ को कम करने के लिए वर्चुअल मोड से जुड़ें। उन्होंने कहा, जिन वकीलों के मामले सूचीबद्ध हैं, उन्हें ई-पास के माध्यम से अदालत परिसर में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी। केवल उन वकीलों को अदालत परिसर में प्रवेश की अनुमति दी जाएगी, जिनके मामले उस विशेष तिथि पर तय किए गए हैं।

उत्तर प्रदेश में भाजपा ने तैयार की संभावित उम्मीदवारों की सूची

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में ऐंटी-इनकमबेंसी से निपटने के लिए भाजपा की ओर से बड़ी संख्या में अपने मौजूदा विधायकों के टिकट बांटने की चर्चाएं थीं। लेकिन अब पार्टी अपनी रणनीति बदलती दिख रही है। सूत्रों के मुताबिक भाजपा बड़ी संख्या में अपने मौजूदा विधायकों को ही उतारने की तैयारी में है। शायद इसकी वजह यह डर है कि मौजूदा विधायकों के टिकट काटने से पार्टी में भीतरघात की स्थिति हो जाएगी। ऐसे में पार्टी ने उन्हीं सीटों पर टिकट बदलने का प्लान बनाया है, जहां विधायक के प्रति बहुत ज्यादा गुस्सा हो। इसके अलावा उन सीटों पर नया उम्मीदवार दिया जा सकता है, जहां 2017 में जीत नहीं मिल पाई थी। इस बार भी भाजपा बड़ी संख्या में मौजूदा विधायकों को ही टिकट दे सकती है। कुछ सीटों पर नए उम्मीदवार उतारे जा सकते हैं, लेकिन बड़ी संख्या में सिटिंग विधायक ही उतरेंगे। दरअसल टिकट काटने पर भाजपा को भीतरघात का डर है।

सार समाचार

मुरादाबाद में एआईएमआईएम की फजीहत, होटल ने किया ओवैसी को कमरा देने से इनकार

नई दिल्ली। एआईएमआईएम नेता असदुद्दीन ओवैसी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दौरे पर हैं। लेकिन मुरादाबाद के एक होटल ने ओवैसी को कमरा देने से मना कर दिया। समर्थकों की भीड़ की वजह से होटल का कमरा नहीं खोला गया। प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली ने इस पर नाराजगी जताई है। शौकत अली ने होटल में खूब हंगामा किया। इसके साथ ही जिला प्रशासन पर कई आरोप भी लगाए। मंझोला इलाके के ड्राइव इन 24 होटल का ये सारा मामला बताया जा रहा है। होटल की तरफ से असदुद्दीन ओवैसी को कमरा देने से इनकार किया गया। इसके बाद जिला प्रशासन पर एआईएमआईएम की तरफ से कई आरोप लगाए गए।

क्या है पूरा मामला

असदुद्दीन ओवैसी की मुरादाबाद में जनसभा होनी थी। एआईएमआईएम के प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली ड्राइव इन 24 होटल में ठहरे हुए थे लेकिन जब आज होटल वालों के ये बताया गया कि असदुद्दीन ओवैसी रात को इसी होटल में रूकना चाहते हैं तो होटल के प्रशासनिक बॉडी ने साफ मना कर दिया। इस बात को लेकर प्रदेश अध्यक्ष शौकत अली और होटल स्टॉफ के बीच में कहासुनी हुई।एआईएमआईएम की तरफ से आरोप लगाया, ह्याहोटल मैनेजमेंट बता रहा है कि पुलिस ने असदुद्दीन ओवैसी को कमरा देने से मना किया है। बता दें कि इससे पहले गुजरात के साबरमती जेल में बंद बाहुबली अतीक अहमद के बेटे अली अहमद के साथ असदुद्दीन ओवैसी की होने वाली जनसभा स्थगित कर दिया गया था। 9 जनवरी को प्रयागराज में होने वाली जनसभा से पहले ही अली अहमद के खिलाफ गंभीर धाराओं में एफआईआर दर्ज हुई और जिसके बाद ओवैसी को ये फैसला लेना पड़ा।

दिल्ली में कोरोना की डराने वाली स्पीड, 5481 नए मामले, तीन की मौत, संक्रमण दर 8.37% के पार

नई दिल्ली। दिल्ली में कोरोनावायरस ने अपनी स्पीड पकड़ ली है। कोरोनावायरस के मामलों में लगातार बढ़ोतरी देखी जा रही है। पिछले 24 घंटे में राष्ट्रीय राजधानी में कोरोनावायरस के 5481 नए मामले सामने आए हैं जबकि 3 लोगों की मौत हो गई है। इसके साथ ही संक्रमण दर में भी वृद्धि हुई है। आज संक्रमण दर 8.37प्र. है जो कि मंगलवार को 6.46प्र. था। दिल्ली में सक्रिय मामलों की संख्या 14889 है। पिछले 24 घंटे में 1575 लोग इस महामारी से रिकवर भी हुए हैं। दिल्ली में सोमवार को 4099 नए मामले दर्ज किए गए थे और रविवार को 3194 नए मामले आए थे। दिल्ली में लगातार कोरोनावायरस के मामलों में बढ़ोतरी देखी जा रही है। इसके साथ ही आज दिल्ली में विकेंड कर्फ्यू का भी ऐलान कर दिया गया है। दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने कहा कि आज डीडीएमए की बैठक में सरकार ने फैसला लिया है कि दिल्ली में शनिवार और रविवार को कर्फ्यू रहेगा। सिसोदिया ने कहा कि सभी सरकारी दफ़्तरों में जरूरी सेवाओं को छोड़कर सबको दफ़्तर आने से मना किया जाएगा और ऑनलाइन या वर्क फ्रॉम होम कराया जाएगा। प्राइवेट दफ़्तर 50प्र. क्षमता के साथ काम करेंगे। दिल्ली सरकार ने फैसला किया है कि दिल्ली में बसें और मेट्रो पूरी क्षमता के साथ चलेंगी लेकिन बसों और मेट्रो में बिना मास्क के लोगों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने गडकरी, अन्य केंद्रीय मंत्रियों से नयी दिल्ली में मुलाकात की

नयी दिल्ली। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री वाई. एस. जगनमोहन रेड्डी ने मंगलवार को यहां केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान, सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर और जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत से मुलाकात की तथा राज्य से जुड़े विभिन्न मुद्दों के बारे में विस्तार से चर्चा की। आधिकारिक बयान के अनुसार, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के साथ करीब एक घंटे की बैठक के दौरान रेड्डी ने विशाखापत्तनम में भीड़भाड़ को खत्म करने के लिये छह लेन की एक सड़क सहित कई सड़क परियोजनाओं को मंजूरी देने की मांग की। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने रिषिकोंडा और भिमली से होते हुए विशाखापत्तनम बंदरगाह के लिये एक राष्ट्रीय राजमार्ग विकसित करने के संबंध में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के बारे में भी चर्चा की। बैठक के दौरान रेड्डी ने बताया कि प्रस्तावित सड़क विशाखापत्तनम के लिये काफी उपयोग साबित होगा क्योंकि इससे ओडिशा और छत्तीसगढ़ से विशाखापत्तनम की दूरी घट जाएगी। मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार से विशाखापत्तनम में ट्रैफिक कम करने के लिये छह लेन की सड़क को मंजूरी देने का भी आग्रह किया।

कोविड-19 के दैनिक मामले 20 हजार से पार हुए तो मुंबई में लॉकडाउन लगेगा: महापौर

मुंबई। मुंबई की महापौर किशोरी पेडनेकर ने मंगलवार को कहा कि अगर यहां कोविड-19 के दैनिक मामले 20,000 का आंकड़ा पार करते हैं तो केंद्र सरकार के नियमों के अनुसार शहर में लॉकडाउन लगाया जाएगा। बृहन्मुंबई महानगर पालिका (बीएमसी) मुख्यालय में अपने कार्यालय में पत्रकारों से बात करते हुए पेडनेकर ने सुझाव दिया कि नागरिक सार्वजनिक बसों और लोकल ट्रेनों में यात्रा करते समय लोग तीन परतों वाला मास्क पहनें। उन्होंने लोगों से जल्द से जल्द टीका लगवाने और कोविड-19 संबंधित सभी मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) का पालन करने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे एक-दो दिनों में नागरिकों को संबोधित कर सकते हैं। एक सवाल के जवाब में पेडनेकर ने कहा कि बीएमसी एक क्रूज़ जहाज से गोवा से लौटने वाले लोगों का आरटी-पीसीआर परीक्षण करेगी और उन्हें पृथकवास में नागरिक केंद्रों में या अगर वे इसके लिए भुगतान करने के लिए तैयार हों, तो होटलों में रखा जाएगा। नौवहन कंपनी के एक अधिकारी ने कहा कि क्रूज़ जहाज पर सवार 2000 से अधिक लोगों में से 66 के कोरोना वायरस से संक्रमित पाए जाने के बाद सभी यात्रियों को सोमवार देर रात गोवा से मुंबई वापस भेज दिया गया था। उन्होंने कहा कि कुछ संक्रमित यात्रियों के वहां एक चिकित्सा सुविधा केंद्र में भर्ती होने से इनकार करने के बाद यह कदम उठाया गया। महापौर ने कहा कि बीएमसी आयुक्त इकबाल सिंह चहल स्थिति पर कड़ी नजर रख रहे हैं, और उन्होंने पहले ही संकेत दिया है, कि अगर शहर में कोविड-19 के मामले 20,000 से अधिक हो जाते हैं तब लॉकडाउन लगेगा। पेडनेकर ने कहा, 'आज कोई भी लॉकडाउन नहीं चाहता है और इसे निश्चित रूप से लागू नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि अभी हर कोई इससे उबर रहा है। अगर लॉकडाउन फिर से लागू किया जाता है तो यह सभी को बुरी तरह प्रभावित करेगा। लेकिन अगर कोविड-19 के दैनिक मामले 20,000 के आंकड़े को पार करते हैं तो केंद्र सरकार के नियमों के अनुसार नगर निकाय और राज्य सरकार द्वारा लॉकडाउन लगाया जाएगा।' उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे कोविड-19 अनुकूल व्यवहार का पालन करें, बाजारों, मॉल और विवाह समारोहों में भीड़भाड़ से बचें और ठीक से मास्क पहनें।

अखिलेश के सपने वाले बयान पर भाजपा का पलटवार, योगी बोले- भगवान कृष्ण आज उनको कोस रहे होंगे

लखनऊ। (एजेंसी)

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर राजनेताओं के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। हाल में ही समाजवादी पार्टी के प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने दावा किया था कि भगवान श्रीकृष्ण ने उनके सपने में आते हैं और यह कहते हैं कि राज्य में सपा की सरकार बनेगी। इसी को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उन पर पलटवार किया है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भगवान कृ?ष्ण आज उनको कोस रहे होंगे। भगवान कृष्ण ने उन्हें ये भी जरूर कहा होगा कि जब तुम्हें सत्ता मिली थी तब मथुरा, वृंदावन, बरसाना, गोकुल, बलदेव के लिए कुछ नहीं कर पाए लेकिन वहां पर कंस को पैदा करके जवाहरबाग की घटना जरूर करवा दी थी। योगी ने हमला जारी रखते हुए आगे कहा कि जब हम यहां पर खुद उपस्थित होकर इस विद्युत परियोजना का लोकार्पण कर रहे हैं तो लखनऊ में कुछ लोगों के सपने में भगवान कृष्ण आ रहे होंगे और कह रहे होंगे कि अरे अपनी नाकामयाबियों पर अब तो रो जाओ। जो काम तुम नहीं कर पाए वो बीजेपी की सरकार ने ?कर दिया। वहीं भाजपा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि पता नहीं उनके सपने में कृष्ण भगवान कैसे आ रहे हैं और सपने में कौन आ रहा होगा इसके डर से ही लोग विक्षिप्त होकर बयान दे रहे हैं। जनता उन्हें समझ चुकी है कि किस तरह से उन्होंने राम भक्तों पर गोलियां चलाई थी और राम मंदिर का विरोध किया था।

अखिलेश का बयान

अखिलेश यादव ने सोमवार को कहा कि समाजवाद का रास्ता ही असल में रामराज्य का मार्ग है। यादव ने दावा किया कि भगवान श्रीकृ?ण हर रात उनके सपने में आते हैं और कहते हैं कि समाजवादी सरकार बनने जा रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा अक्सर रामराज्य की बात करती है लेकिन असल में समाजवाद का रास्ता ही रामराज्य का रास्ता है। उन्होंने कहा, समाजवाद का रास्ता ही रामराज्य का रास्ता है। जिस दिन पूरी तरह से समाजवाद लागू हो जाएगा उसी दिन से रामराज्य शुरू हो जाएगा।

गलवान में चीनी चाल का भारत ने दिया मुंहतोड़ जवाब, भारतीय जवानों ने शान से लहराया एलएसी पर तिरंगा

नई दिल्ली। पिछले कई दिनों से चीन और भारत के बीच टकराव की स्थिति लगातार देखी जा रही है। हाल में ही चीनी सैनिकों ने प्रोपेगेंडा के तहत अपना झंडा फहराते हुए एक वीडियो जारी किया था। जिसके बाद चीनी यूजर्स की ओर से यह दावा किया गया था कि उनकी सेना ने गलवान में अपना झंडा लहरा दिया है। हालांकि गलवान पॉइंट से यह क्षेत्र काफी दूर था और चीन का यह प्रोपेगेंडा पूरी तरह से झूठा साबित हुआ। लेकिन भारतीय सेना ने चीन को मुंहतोड़ जवाब देने की कोशिश की है। दरअसल, चीनी सैनिकों के झंडा फहराने वाले वीडियो के वायरल होने के बाद अब भारतीय जवानों की भी कुछ तस्वीरें सामने आई हैं। इन तस्वीरों में भारतीय जवान गलवान में अपना तिरंगा झंडा फहराते आ रहे हैं। मौका था नववर्ष के उत्सव का। जैसे ही यह खबर चीन को मिली उसके पसीने छूटने लगे। आपको बता दें कि 2020 में भारत और चीन के बीच गलवान घाटी में खूनी झड़प हुई थी। इसके बाद दोनों ही देशों के बीच तल्खी बढ़ गई। चीनी सैनिकों द्वारा झंडा फहराने के वीडियो को वायरल किए जाने के बाद भारत में विपक्ष सरकार पर हमलावर हो गया। हालांकि यह बात भी जल्द ही साफ हो गया कि जो वीडियो दिखाया गया है वह एलएसी पर चीन की तरफ का है। जवाब में भारतीय जवान बर्फ से ढकी चोटी पर तिरंगे को फहराते हुए शान से खड़े नजर आ रहे हैं। जाहिर सी बात है कि इस तरह की तस्वीरें चीन को डरा सकती हैं। भारतीय सेना की इन तस्वीरों से यह तो साफ हो ही गया कि गलवान घाटी में भारत की स्थिति कितनी मजबूत हुई है।

आम आदमी पार्टी पंजाब में भगवंत मान को सीएम चेहरे के तौर पर पेश कर उतरेगी चुनाव मैदान में

चंडीगढ़। (एजेंसी)

पंजाब में विधानसभा चुनाव के लिए राजनैतिक दलों ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। वहीं , आम आदमी पार्टी ने भी अपने सीएम चेहरे को लेकर निर्णय ले लिया है। आम आदमी पार्टी ने पंजाब के चुनाव अभियान में अगले सीएम के तौर पर पार्टी की ओर से सीएम के तौर पर भगवंत मान को उतारने का निर्णय लिया है। इसकी बाकायदा एक दो दिनों में पार्टी घोषणा कर देगी।

आम आदमी पार्टी में हालांकि इससे पहले किसान नेता बलबीर सिंह राजेवाल का नाम भी उभर कर सामने आ रहा था। लेकिन पार्टी किसी भी प्रकार का जोखिम नहीं लेना चाहती। यही वजह है कि अब पार्टी भगवंत मान को लेकर एकमत हो चुकी है। लिहाजा पंजाब में जिस बात का सबसे ज्यादा इंतजार था वो लगभग खत्म होता दिख रहा है। बताया जा रहा है कि इस बारे में खुद अरविंद केजरीवाल ही घोषणा करेंगे।

मिली जानकारी के मुताबिक सांसद भगवंत मान को पार्टी की तरफ से मुख्यमंत्री का चेहरा बनाए जाने को लेकर पार्टी की सर्वोच्च समिति पीएसी में सहमति बन गई है। पार्टी सूत्रों के मुताबिक बीते दिनों हुई पीएसी की बैठक में मुख्यमंत्री के चेहरे के तौर पर मान के नाम पर मुहर लगाई गई है, लेकिन अब इसकी आधिकारिक घोषणा होना बाकी है।

आम आदमी पार्टी के सूत्रों का कहना है कि पीएसी में मुहर लगने के बाद पार्टी मान के नाम को लेकर आधिकारिक घोषणा करने की तैयारी कर रही थी, लेकिन इसी बीच आप संयोजक व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मंगलवार को कोरोना संक्रमित हो गए, जन्हिंने संक्रमण की वजह से स्वयं को आइसोलेट कर दिया है। इस वजह से मान के नाम की घोषणा को लेकर देरी होने की संभावनाएं हैं। बता दें कि इस बार चुनाव में कांग्रेस के साथ आम आदमी पार्टी, शिरोमणि अकाली दल, भाजपा गठबंधन के बीच राजनीतिक मुकाबला होने जा रहा है। इसके पहले ही राज्य में माहौल गमार्या हुआ है।

आपको बता दें कि भगवंत मान पंजाब के एक लोकप्रिय हास्य कलाकार हैं, लेकिन वर्तमान में वह आम आदमी पार्टी के सदस्य के साथ ही लोकसभा सदस्य भी हैं। मान पंजाब के संगरूर लोकसभा क्षेत्र से लगातार दो बार सांसद निर्वाचित हुए हैं। मान ने अपने राजनीतिक करियर की शुरूआत मनप्रीत सिंह बादल की पंजाब पीपुल्स पार्टी से की थी, लेकिन बाद में वह आम आदमी पार्टी में शामिल हो गए थे।

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के जवाब के विरोध में भाजपा ने दिल्ली विधानसभा से बहिर्गमन किया

नयी दिल्ली। (एजेंसी)

दिल्ली विधानसभा सत्र के दूसरे दिन जब उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने आरोप लगाया कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोविड से जान गंवाने वालेलोगों को मुआवजा देने की दिल्ली सरकार की शक्ति छीन ली है, तो भारतीय जनता पार्टी के विधायकों ने सदन से बहिर्गमन किया। सिसोदिया ने भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता को 'निरर्थक बात' नहीं करने को लेकर आगाह भी किया। गुप्ता ने पूछा था कि महामारी से मृत लोगों के आश्रितों को दिल्ली सरकार अनुकंपा के आधार पर नौकरी क्यों नहीं दे रही है? सिसोदिया ने इसके जवाब में भाजपा की आलोचना की और कहा कि उन्हें इसके लिए गृहमंत्री अमित शाह और तथा उपराज्यपाल के पास जाकर सवाल करना चाहिए। सिसोदिया ने कहा, 'केजरीवाल सरकार, ड्यूटी पर तैनात किसी भी कर्मचारी के देहांत के बाद उसके परिजन को नौकरी देने के पक्ष में है लेकिन यह सेवा विभाग के अंतर्गत आता है जो दिल्ली के उपराज्यपाल के अधीन है।' इस मामले में शाह का नाम लिए जाने के बाद नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने सदन में अमित शाह जिंदाबाद के नारे लगाए और भाजपा के अन्य विधायकों के साथ बहिर्गमन किया।

'बुली बाई' ऐप मामला: उत्तराखंड में एक महिला को हिरासत में लिया गया तो बेंगलुरू में गिरफ्तार हुआ एक छात्र

देहरादून। (एजेंसी)

मुंबई साइबर पुलिस ने 'बुली बाई' ऐप मामले की मुख्य आरोपी एक महिला को उत्तराखंड से हिरासत में लिया है। जिसने 'नीलामी' के लिए एक ऐप पर मुस्लिम महिलाओं की तस्वीरें अपलोड की थीं। पुलिस अधिकारी से मिली जानकारी के मुताबिक, मुंबई साइबर पुलिस के एक दल ने उत्तराखंड से एक महिला को हिरासत में लिया है, जो मुख्य आरोपी है। फिलहाल महिला से पूछताछ की जा रही है। आपको बता दें कि मुंबई साइबर पुलिस महिला मुंबई लाने का इंतजाम कर रही है। इससे पहले महिला को एक अदालत में ट्रांजिट रिमांड के लिए पेश किया जाएगा। हालांकि, इस मामले में बेंगलुरू से एक छात्र विशाल को भी गिरफ्तार किया गया है। जिसे 10 जनवरी तक के लिए हिरासत में भेज दिया गया है। विशाल के वकील ने बताया कि मेरे मुवक्किल को 10 जनवरी तक पुलिस हिरासत में भेज दिया गया है। इस मामले में उन्हें झूठा फंसाया गया है। इसके अलावा मुंबई साइबर पुलिस ने ऐप डेवलपर और उसका प्रचार-प्रसार करने वाले ट्विटर हैंडल के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।

दरअसल, 'बुली बाई' नामक ऐप पर 'नीलामी' के लिए बिना इजाजत सैकड़ों मुस्लिम महिलाओं के छेड़छाड़ की गई तस्वीरें और उससे जुड़ी जानकारी अपलोड करने का मामला है। इस मामले को शिवसेना सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने उठाया था और एक धर्म विशेष की महिलाओं को निशाना बनाने के मामले में कार्रवाई की मांग की थी। आपको बता दें कि 'बुली बाई' ऐप से पहले 'सुल्ली डील्स' नामक ऐप सामने आया था। जो एक धर्म विशेष की महिलाओं को निशाने पर ले रहा था। इसका मुद्दा भी प्रियंका चतुर्वेदी ने ही उठाया था। हालांकि 'बुली बाई' ऐप के संबंध में मुंबई पुलिस ने अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया था।

उत्तर प्रदेश: कांग्रेस की मैराथन दौड़ में भगदड़, तीन लड़कियां घायल, पार्टी ने जतायी 'साजिश' की आशंका

लखनऊ। (एजेंसी)

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस से पूरा दमखम लगा रही है। पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस लगातार उत्तर प्रदेश में खुद को मजबूत करने की कोशिश में है। इसी कड़ी में प्रियंका गांधी ने इस विधानसभा चुनाव में महिलाओं को साधना शुरू किया है। इसी को लेकर उन्होंने एक नारा दिया है 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं'। आज उत्तर प्रदेश के बरेली में 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। अचानक इस आयोजन में भगदड़ मच गया और 3 लड़कियां मामूली रूप से घायल हो गईं। सिटी मजिस्ट्रेट राजीव पांडेय के मुताबिक मैराथन दौड़ के दौरान घायल हुए तीन लड़कियों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। पांडेय ने बताया कि इस आयोजन के लिए 200 बच्चियों को इकट्ठा होने की अनुमति दी गई थी लेकिन इससे कहीं ज्यादा छात्राएं आयोजन में शामिल हुईं। घायल बच्चियों का प्राथमिक उपचार कराया गया।

शहर के बिशप मंडल इंटर कॉलेज मैदान में मंगलवार सुबह करीब नौ बजे बरेली जिले के विभिन्न स्कूलों की छात्राएं इकट्ठा हुई थीं। आयोजकों ने 'लड़की हूं, लड़ सकती हूं' थीम पर मैराथन दौड़ का आयोजन किया, लेकिन आरोप है कि मैदान में क्षमता से अधिक छात्राएं एकत्रित हुईं। कांग्रेस ने इस घटना के पीछे भाजपा द्वारा 'साजिश' की आशंका जतायी है। वहीं, भाजपा ने कांग्रेस पर अपनी ओछी राजनीति के लिये मासूम बच्चियों को 'मोहरा' बनाने का आरोप लगाया है। हालांकि कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि इस तरह के आयोजन होते हैं तो ऐसी कुछ घटनाएं हो जाती हैं। मगर ये नहीं होनी चाहिए। आगे इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति नहीं होगी।

प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता अशोक सिंह ने राज्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा, 'भाजपा नेतृत्व वाली सरकार द्वारा रची गई साजिश के कारण ऐसा हुआ। जिला प्रशासन को पता था कि मैराथन दौड़ आयोजित की जा रही है, लेकिन उसने सहयोग नहीं किया।' इस बीच, बरेली की पूर्व महापौर सुप्रिया एरन ने मैराथन दौड़ में भगदड़ को लेकर संवाददाताओं से कहा, 'लोग वैष्णो देवी तीर्थ यात्रा पर गए थे, वहां क्या हुआ? आप उस घटना को क्या कहेंगे? यह (दूसरों की) आगे बढ़ने की इंसानी फितरत है। यहां स्कूल में पढ़ने वाली लड़कियां एकत्र हुईं और थोड़ी भगदड़ हो गयी।' प्रदेश भाजपा ने बरेली की घटना को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधा है। भाजपा ने ट्वीट कर आरोप लगाया, 'अपनी ओछी राजनीति के लिए मासूम बच्चियों को मोहरा बनाने वाली कांग्रेस की बेशर्मी की पराकाष्ठा है। झांसी में बच्चियों को पिटवाया, लखनऊ में भूखे घुमाया और बरेली में कुचलवाया! शर्म करो प्रियंका वाद्रा।

भारत में सबसे आधुनिक होगी जम्मू-कश्मीर पुलिस, आतंक से मुकाबले के लिए मिलने जा रहे हैं अमेरिकी हथियार

नई दिल्ली (एजेंसी)

भारत में सर्वाधिक कठिन चुनौतियों का सामना करने वाली जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवानों को आतंकवाद रोधी अभियानों को अंजाम देने के लिए जल्द ही अमेरिकी सिग सॉयर असॉल्ट राइफल और पिस्तौल दी जाएगी। अधिकारियों ने बताया कि सेना ने पाकिस्तान से लगी नियंत्रण रेखा (एलओसी) और चीन से लगी वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) की रखवाली करने वाले अपने जवानों को पहले ही कई अत्याधुनिक राइफल दी हैं। इसी तर्ज पर आगे बढ़ते हुए जम्मू-कश्मीर पुलिस बल 500 सिग सॉयर-716 राइफल और 100 सिग सॉयर एमपीएक्स 9एमएम पिस्तौल खरीदेगा। जम्मू-कश्मीर पुलिस ऐसे आधुनिक हथियार हासिल करने वाली, शायद देश की पहली पुलिस होगी। बताया जा रहा है कि सुरक्षा प्राप्त लोगों के लिए तैनात ह्यस्पेशल ऑपरेशन ग्रुपह्ल (एसओजी) और कर्मियों को भी इन हथियारों से लैस किया जाएगा। हम आपको बता दें कि जम्मू-कश्मीर पुलिस ने हाल ही में सरकारी खरीद पोर्टल जीईएम (गवर्नमेंट ई-मार्केट) पर, हथियारों की खरीद के लिए वैश्विक बोलियां आमंत्रित की थीं।

हम आपको बता दें कि पुलिस द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले इन्सास (इंडियन स्मॉल आर्म्स सिस्टम) राइफल्स के 5.56ग45 मिमी इंटरमीडिएट कार्ट्रिज की तुलना में सिग सॉयर-716 असॉल्ट राइफल के 7.62ग51 मिमी के कार्ट्रिज अधिक शक्तिशाली हैं। बिना मैगजीन के 3.82 किलोग्राम की राइफल प्रति मिनट 650-850 गोलियां दाग सकती है और 500 मीटर की रेंज के कारण आतंकवाद रोधी अभियानों में एक प्रभावी हथियार साबित हो सकती है। इसके अलावा, राइफल किसी भी परिस्थिति में इस्तेमाल के लिए मजबूत, आधुनिक और सरल है। इसी तरह बिना मैगजीन के, 2.94 किलोग्राम की एसआईजी एमपीएक्स 9एमएम पिस्तौल प्रति मिनट 850 गोलियां चला सकती हैं। यह दोनों हथियार गैस से चलने वाले हैं। उल्लेखनीय है कि भारत ने 2019 में, सिग सॉयर के साथ लगभग 700 करोड़ रुपये की लागत से 72,400 ह्यअसॉल्ट राइफलह्ल के लिए एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए थे।

कश्मीर में मुठभेड़

उधर, जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद रोधी अभियानों की बात करें तो कुलगाम जिले में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में मंगलवार को लश्कर-ए-तैयबा के दो आतंकवादी मारे गए। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा बलों ने कुलगाम जिले के ओके गांव की घेराबंदी कर वहां तलाश अभियान शुरू किया था, जो बाद में मुठभेड़ में बदल गया। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ में दो आतंकवादियों की मौत हो गई। पुलिस महानिरीक्षक (कश्मीर) विजय कुमार ने बताया कि मारे गए दोनों आतंकवादी स्थानीय लोग थे और लश्कर से जुड़े थे। उन्होंने बताया कि वे कई आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त थे। इससे पहले सोमवार को भी श्रीनगर में सुरक्षा बलों के साथ दो अलग-अलग मुठभेड़ों में प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के कुख्यात और वांछित आतंकी सलीम पारे समेत दो आतंकवादी मारे गये थे। पुलिस ने बताया था कि मारा गया दूसरा आतंकी पाकिस्तानी नागरिक है।

कश्मीर में बर्फबारी

आइये अब बात करते हैं कश्मीर के मौसम की। कश्मीर में मंगलवार को ताजा बर्फबारी होने के कारण कई उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं और सड़कों से भी बर्फ हटाने का काम जारी है। अधिकारियों ने बताया कि सोमवार से घाटी के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में रुक-रुक कर बर्फबारी हो रही है। वहीं, जम्मू-कश्मीर की ग्रीष्मकालीन राजधानी श्रीनगर में साल की पहली बर्फबारी हुई। बर्फबारी और कम दृश्यता के कारण कश्मीर आने-जाने वाली उड़ानें प्रभावित हुई हैं। भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण के एक अधिकारी ने कहा, "अभी तक, 16 उड़ानें रद्द की गई हैं।" अधिकारियों ने बताया कि गुलमर्ग और पहलगाम के पर्यटक रिजॉर्ट सहित सभी प्रमुख शहरों में बर्फ हटाने का काम शुरू कर दिया गया है। मौसम विज्ञान विभाग ने आठ जनवरी तक मध्यम से भारी हिमपात या बारिश का पूर्वानुमान लगाया है। इस दौरान कुछ स्थानों पर भारी हिमपात की भी संभावना है।

कश्मीर में उत्सव

कश्मीर में इस समय 40 दिन का 'चिल्लई कलां' का दौर चल रहा है। इस दौरान क्षेत्र में कड़ाके की ठंड पड़ती है और तापमान में भी गिरावट दर्ज की जाती है, जिससे यहां की प्रसिद्ध डल झील के साथ-साथ घाटी के कई हिस्सों में पानी की आपूर्ति लाइनों सहित जलाशय जम जाते हैं। चिल्लई कलां के दौरान जीवन तो दुश्वार हो जाता है लेकिन लोग इसे इंज्वॉय भी करते हैं। श्रीनगर में तीन दिवसीय शीतकालीन उत्सव 'इस्ताकबाल-ए-चिला-ए-कलां' में गीत-संगीत प्रेमियों का जमावड़ा लगा। श्रीनगर के टैगोर हॉल में आयोजित इस कार्यक्रम में भाग लेने वालों में ज्यादातर युवा ही थे। प्रभासाक्षी संवाददाता ने इस आयोजन का जायजा लिया और प्रतिभागियों तथा आयोजकों से बातचीत की।

सुविचार सुविधा और सम्मान दूसरों को देना चाहिए, लेने की कामना नहीं रखनी चाहिए। - अज्ञात

संपादकीय

सावधानी का समय

अमेरिका से भारत तक कोरोना के बढ़ते मामले हमें चिंता में डालने लगे हैं। पिछले सप्ताह से भारत में कोरोना संकट तेजी से बढ़ने लगा है। यदि प्रतिदिन 33 हजार से ज्यादा लोगों में कोरोना संक्रमण मिलने लगा है और ठीक होने वालों का दैनिक आकंड़ा महज 11 हजार के आसपास ही है, तो इसका मतलब है, सक्रिय मामलों की संख्या बढ़ने लगी है। गनीमत है, मरने वालों की संख्या सवा सौ के आसपास है और यह आंकड़ा बढ़ना नहीं चाहिए। ओमीक्रोन के मामले अभी भी कम हैं, लेकिन क्या डेल्टा का हमला फिर तेज हुआ है? डेल्टा क्या दूसरी लहर के समान ही घातक है? आने वाले दिनों में जब और आंकड़े सामने आएंगे, तब पता चलेगा। तीसरी लहर अगर शुरू हो गई है, तो स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए जिम्मेदार लोगों को विशेष रूप से सक्रिय हो जाना चाहिए? देश में कुल मामले डेढ़ लाख का आंकड़ा पार करने वाले हैं, क्या इस बार कुल मामलों को हम दो लाख से नीचे रोक पाएंगे? हम कैसे भुला दें, पिछले वर्ष मई में दूसरी लहर के समय प्रतिदिन चार लाख से ज्यादा मामले आने लगे थे और प्रतिदिन लगभग चार हजार लोग जान गंवा रहे थे। आज जरूरी है, उस बेहद बुरे दौर को याद कर लिया जाए और हर स्तर पर यथोचित तैयारी रखी जाए। विशेषज्ञों की नजर में फिलहाल राहत यही है कि ज्यादातर लोगों का इलाज घरों में ही चल रहा है और अस्पतालों पर दबाव बढ़ना नहीं शुरू हुआ है। फिर भी समय रहते सुनिश्चित करना चाहिए कि किसी भी मरीज को बिस्तर या ऑक्सीजन से वंचित न रहना पड़े। इस बार अगर किसी तरह की चूक हुई, तो अक्षम्य होगी। दूसरी लहर की तमाम खामियों, लापरवाहियों से हमने क्या सीखा है, यह सामने आने वाला है। ऐसे विशेषज्ञ सही सिद्ध होने चाहिए, जो तीसरी लहर के कम घातक होने का अनुमान लगा रहे हैं। तीसरी लहर को रोकने में टीकाकरण का कितना योगदान है, यह भी आने वाले दिनों में पता चलेगा। एक खतरा यह भी है कि अगर टीकाकरण के बावजूद लोग बड़ी संख्या में संक्रमित हुए, तब लोगों का टीकों पर से विश्वास उठ जाएगा। अपने देश में अभी ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है, जो टीकों के लिए सहर्ष सामने नहीं आ रहे हैं। इसी महीने भारत में टीकाकरण को एक साल पूरा हो जाएगा, अभी करीब 64 प्रतिशत लोगों को ही टीके की दोनों खुराक मिली है। ऐसे में, टीकाकरण और तेज करने की वकालत कतई गलत नहीं है। सोमवार से देश में 15 से 18 साल के किशोरों को कोरोना टीका लगाने की शुरुआत स्वागतयोग्य है। टीकाकरण शुरू होने से पहले इस उम्र वर्ग के आठ लाख किशोरों ने जिस उत्साह के साथ पंजीकरण कराया है, उससे साफ है कि इस आयु वर्ग के टीकाकरण में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। इसके बाद 10 जनवरी से 60 से ज्यादा उम्र के बुजुर्गों, स्वास्थ्यकर्मियों व अन्य कोरोना योद्धाओं को बुस्टर डोज लगने की विधिवत शुरुआत हो जाएगी। लेकिन टीके से भी ज्यादा जरूरी है कि अपनी सुरक्षा के लिए सचेत रहना। याद रखें, पूर्ण रूप से टीकाकरण के बावजूद इजरायल भी चिंता में है और अमेरिका में तो कोरोना की नई लहर आ गई है। भारत को हर तरह से सचेत रहकर कोरोना महामारी से लड़ना है और साथ ही, यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि फिर से लॉकडाउन की नौबत न आने पाए।

आइये, सोशल मीडिया को मेन मीडिया बनाएं

- कौशल मूंदड़ा

अजी छोड़िये, सोशल मीडिया पर तो कुछ भी चलता रहता है, किस पर विश्वास करें, आप भी देखो और मजे लो...। मन पड़े तो फारवर्ड करो, मन पड़े तो डिलीट करो.. कौन पूछ रहा है...। जी हां, सोशल मीडिया के बारे में हर किसी की यही राय सामने आती है। लेकिन, जब जरूरत पड़ती है तब यही सोशल मीडिया किसी भी मुद्दे को मुखर बनाता है, और उसे परिणाम तक भी ले जाता है। सोशल मीडिया पर वृहद रूप से सामने आने वाली राय को बड़ी-बड़ी कम्पनियों को भी मानने को मजबूर होना पड़ा है। ऐसे में हम सोशल मीडिया को 'कुछ भी चलता है' का तमगा देकर नकार नहीं सकते। दरअसल, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर जैसे ही अभिव्यक्ति की मर्यादा टूटती है, उसी जगह उसे सोशल मीडिया करार दिया जाता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की मर्यादा के बीच का महीन अंतर ही सोशल मीडिया और मेन मीडिया का अंतर है। यदि कोई ऊटपटांग, अभद्र या अमर्यादित भाषण कर रहा है, तब मेन मीडिया उसे किस तरह पाठक तक पहुंचाता है और सोशल मीडिया किस तरह, यही तरीके भी मीडिया शब्द के प्रति जिम्मेदारी को भी परिभाषित करते हैं। ऐसा नहीं है कि पहले भी 'हेट स्पीच' नहीं होती थी, अनर्गल, अमर्यादित, अभद्र प्रलाप नहीं होते थे, भाषण हों या नारे, इन डिजिटल माध्यमों के आने से पहले भी हुआ करते थे, तब भी मेन मीडिया अपनी मर्यादा की जिम्मेदारी को बखूबी निभाता रहा है और आज भी निभा रहा है। पाठक तक बात पहुंचती थी और अब भी पहुंचती है तो अमर्यादित शब्दों को ज्यों का त्यों कभी नहीं पहुंचाया जाता। एक सभ्य भाषा का प्रस्तुतीकरण आज भी होता है। इसके पीछे सीधा और साफ नजरिया है कि हम सभ्य समाज में रहते हैं और ऊटपटांग बातों को सभ्य समाज का बड़ा प्रतिशत न तो स्वीकार करता है न ही अपनी नई पीढ़ी को ऐसी सीख देना चाहता है। वहीं, दूसरी तरफ नए तकनीकी माध्यमों में ऐसा नवाचार आया है कि अमर्यादित आचरण का ज्यों का त्यों प्रस्तुतीकरण सामने आने लगा है। ऊपर से जुमला यह कि हम थोड़े ही कह रहे हैं, वह कह रहा है, उसने ऐसा कहा है, वही तो सामने ला रहे हैंज..। जबकि, आज भी मेन मीडिया यदि ज्यों का त्यों प्रस्तुतीकरण देने को मजबूर भी होती है तो ऑडियो-वीडियो माध्यम में बीप की आवाज, अमर्यादित आचरण के दृश्य को ब्लर करने और प्रिंट मीडिया में डॉट-डॉट से प्रदर्शित करने का विकल्प प्रयोग किया जाता है। लोग स्वत: समझ जाते हैं कि अगले ने कुछ गलत और अमर्यादित बात कही होगी जो प्रसारण योग्य नहीं होगी। सामान्य रूप से भी प्रिंट मीडिया ऐसे किसी शब्द का प्रयोग आज भी नहीं करता जो बेहद ही नकारात्मक होते हैं। उदाहरणत: 'अमुक शख्स अपनी अनर्गल बातों से गंदगी फैला रहे हैं..' इसे प्रिंट मीडिया आज भी ज्यों का त्यों छापने से दूर रहता है, इसके बजाय यह लिखा जाता रहा है कि 'अमुक शख्स की बातें ऐसी हैं जो कतई उचित नहीं कही जा सकती..'। इतने से शब्द पर इतना ध्यान रखने की जिम्मेदारी मेन मीडिया को परिभाषित करती है और 'वायरल वैल्यू' की डिमाण्ड के चलते धड़ल्ले से ज्यों का त्यों प्रस्तुतीकरण उस माध्यम को सोशल मीडिया करार दे देता है। और एक बार फिर वे माध्यम जो मेन मीडिया से हटकर बड़े-बड़े आंदोलन खड़ा करने में सक्षम हुए हैं और आज भी सक्षम हैं, क्षण भर में सोशल मीडिया की परिभाषा में डाल दिए जाते हैं। एक बात और आती है कि खबर के साथ सबूत भी जरूरी है, तब यह बात हर तरह के मीडिया पर भी लागू होती है और लागू रही है। जब वीडियो माध्यम नहीं था, तब भी सबूत होते ही थे, कोई जब चुनौती देता था तभी उनको संवैधानिक प्रक्रिया के तहत उजागर किया जाता था, तब भी स्रोत उजागर नहीं होता था और आज भी स्रोत उजागर नहीं होता, मांगे जाने पर सबूत ही प्रदर्शित किए जाते हैं। चर्चा में यह बात भी कही जाती है कि दर्शक या पाठक भी ऐसा ही देखना चाहते हैं। यही बात पहले सिनेमा के लिए भी कही जाती थी, लेकिन तब भी कुछ फिल्म, कुछ आर्ट फिल्म ऐसी भी आती थी जो रिकॉर्ड तोड़ जाती थीं। ऐसा कैसे होता था, यानी इस बात को भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि दर्शक अच्छी प्रस्तुतियों को भी पसंद करते हैं। उनकी पसंद तो दिखाने के बाद तय हो रही है, दिखाने से पहले क्यों तय किया जाता है कि दर्शकों को क्या देखना पसंद है। इसी तरह, सिक्के के दूसरे पहलू पर भी विचार करना चाहिए। जिस शख्स को कुछ सैकड़ों, कुछ हजार लोग ही जानते होंगे, उस शख्स को मशहूर होना है तो वह आज की सोशल मीडिया की कार्यप्रणाली का पूरा लाभ उठाता है। भले ही उसकी बात सुनने कोई मीडिया नहीं गया हो, लेकिन अपनी बात को रिकॉर्ड करवाकर सोशल मीडिया माध्यमों पर वायरल करवा देते हैं और 'वायरल वैल्यू' की अवधारणा को बैठे-बिठाए कंटेंट मिल जाता है और अगले का काम बैठे बिठाए हो जाता है। अब उसे जानने वाले कुछ सैकड़ों नहीं, कुछ हजारों नहीं बल्कि कुछ लाखों हो जाते हैं। यही कारण है कि अब डिजिटल की तरफ बढ़ती मीडिया का भी बंटवारा किया जाने लगा है। मेन मीडिया और सोशल मीडिया, इन दो श्रेणियों में बांटकर मीडिया के क्षेत्र में मेहनत करने वालों को देखने का नजरिया भी अलग-अलग किया जाने लगा है। और यह अंतर मीडिया शब्द की जिम्मेदारी को हलके से लेने के कारण भी है। किसी भी बात को कहने का अंदाज होता है, एक ही बात कई तरीकों से प्रस्तुत की जा सकती है। कोशिश तो की ही जा सकती है। वरिष्ठ पत्रकार कहते भी हैं, जो बात शांति से कही जा सकती है उसके लिए चिल्लाने की क्या जरूरत हैज..। यदि बात में दम होगा तो वह धीमी आवाज में भी उतना ही प्रभाव करेगी। यहां कबीरदास जी का लिखा यह दोहा भी महत्वपूर्ण है कि 'साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय, सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।' इस बात पर भी विचार किया जाना चाहिए कि सोशल मीडिया पर कार्य कर रहे मीडियाकर्मियों की लेखनी, जिजीविषा से वह मेन मीडिया के विकल्प के रूप में तो कहा जा रहा है, लेकिन मेन मीडिया माना नहीं जा रहा। सोशल मीडिया पर संघर्ष कर रही कलम मेन मीडिया का दर्जा पाने के लिए तत्पर है तो दूसरी तरफ सरकार बेलगाम होते सोशल मीडिया प्लेटफार्म से चिंतित होकर उसे मर्यादित आचरण के अनुरूप ढालने को तत्पर है। सरकार ऐसा एक प्लेटफार्म सरकारी स्तर पर स्थापित कर सकती है जहां डिजिटल मीडिया एक ही छत के नीचे रहे, इससे एक लाभ यह भी होगा कि वहां सामने आ रही राय को संकलित कर सरकार अपनी नीतियों का निर्धारण भी कर सकती है और अमर्यादित आचरण से पहले इससे जुड़े लोग दस बार सोचेंगे भी। सोशल मीडिया कहीं कमजोर भी नहीं है। जब हम निर्भया मामले को देखते हैं या मी-टू जैसे मुद्दों पर नजर डालते हैं तो सोशल मीडिया मजबूती से अपनी उपस्थिति दर्ज कराता नजर आता है, हालांकि कुछ तत्व हैं जो मर्यादित आचरण की सीमा का उल्लंघन भी कर जाते हैं, लेकिन नियमों को मजबूत कर ऐसे तत्वों को भी समझाया जा सकता है कि बात रखें लेकिन मर्यादा में, सहज और सामान्य शब्दों में, हिन्दी हो चाहे अंग्रेजी, दोनों का ही शब्दकोश बहुत बड़ा है, अपनी बात रखने के लिए अच्छे शब्दों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

बदलते वक्त के साथ तार्किक हो नजरिया

उमेश चतुर्वेदी

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने लड़कियों की शादी की न्यूनतम उम्र सीमा को 18 से बढ़ाकर 21 करने का फैसला क्या लिया, राजनीति शुरू हो गई है। एमआईएमआईएन के प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने सवाल उठाया है कि अगर 18 साल की उम्र के युवा मतदान कर सकते हैं तो शादी की उम्र 21 साल क्यों होनी चाहिए। विवादित बयानों के लिए विख्यात समाजवादी पार्टी के सांसद शफीकुर्रहमान बर्क ने इससे भी आगे की बात कही है। उन्होंने कहा है कि लड़कियों की शादी की उम्र सीमा बढ़ाने के बाद वे और ज्यादा आवारगी करेंगी। समाजवादी पार्टी के ही महाराष्ट्र के नेता अबु आजमी तो इस विधेयक को जनसंख्या नियंत्रण की कोशिश से जोड़ने से भी नहीं रुके। झारखंड के भी एक मंत्री ने इस प्रस्तावित कानून का विरोध किया है। झारखंड सरकार के मंत्री हफीजुल अंसारी ने कहा कि लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाने की कोशिश दरअसल असल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए है। कांग्रेस सांसद शक्ति सिंह गोहिल का कहना है कि उत्तर प्रदेश के चुनाव को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी ध्रुवीकरण की राजनीति के तहत लड़कियों की शादी की उम्र बढ़ाने की तैयारी में है। दरअसल, सरकार ने यह फैसला समता पार्टी की पूर्व अध्यक्ष जया जेटली की अध्यक्षता वाली टास्क फोर्स की सिफारिश पर लिया है। महिला और बाल विकास मंत्रालय ने यह टास्क फोर्स जून, 2020 में गठित की थी। इसके सहअध्यक्ष नीति आयोग के सदस्य वीके पॉल थे। दस सदस्यीय इस समिति में जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की कुलपति नजमा अख्तर, एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय मुंबई की पूर्व कुलपति वसुधा कामथ और गुजरात की जानी-मानी महिला रोग विशेषज्ञा दीप्ति शाह समेत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, महिला व बाल विकास, उच्च शिक्षा, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता मंत्रालयों के सचिव और कानून एवं न्याय मंत्रालय के विधायी विभाग के अधिकारी शामिल थे। इस टास्क फोर्स को शिशु मृत्यु दर, मातृ मृत्यु दर, कुल प्रजनन दर, जन्म के समय लिंग अनुपात, बाल लिंग अनुपात समेत पोषण और स्वास्थ्य से संबंधित तमाम अन्य मुद्दों पर विचार करना था। वैसे प्रधानमंत्री मोदी ने इस कानून में बदलाव के संकेत पिछले साल के स्वाधीनता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से देश के नाम अपने संबोधन में दे दिए थे। तब प्रधानमंत्री ने कहा था, 'हमने एक कमेटी का गठन किया है, जो यह सुनिश्चित करेगी कि बेटियां अब कुपोषण की शिकार न हों और उनकी शादी सही समय पर हो। जैसे ही कमेटी की रिपोर्ट सामने आएगी, बेटियों की शादी की उम्र के बारे में, उचित फैसले लिए जाएंगे।' टास्क फोर्स की सिफारिश डॉक्टरों की उस राय पर आधारित है, जिसके मुताबिक पहले बच्चे के जन्म के समय, महिला की उम्र कम से कम 21 साल होनी चाहिए। रिपोर्ट में कहा गया है कि शादी में देरी से परिवारों, महिलाओं, बच्चों और समाज पर सकारात्मक आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी असर पड़ते हैं। टास्क फोर्स ने दावा किया है कि उसकी रिपोर्ट कम तथा मध्यम आय वाले पचास से ज्यादा देशों से जुटाए गए आंकड़ों पर आधारित है। टास्क फोर्स ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि उन शिशुओं की सेहत खराब होने का खतरा कम रहता है, जिस महिला की उम्र पहले बच्चे के जन्म के वक्त 27 से 29 वर्ष होती है। टास्क फोर्स ने माना है कि मां बनने की आदर्श आयु 21 से 35 वर्ष के बीच की होती है। इसके बावजूद इस प्रस्तावित कानूनी बदलाव के बाद एक सवाल मुंहबाए खड़ा रहेगा। दरअसल, सहमति से शारीरिक संबंध की कानूनी उम्र सीमा 18 साल है। जाहिर है कि जब शादी की न्यूनतम उम्र 21 साल की जाएगी तो सहमति वाला यह प्रावधान भी आड़े आएगा। सवाल यह उठेगा कि क्या बिना शादी के सहमति से बनाये गये संबंध जायज हैं या नहीं। लेकिन टास्क फोर्स ने इस पर आलोचनात्मक नज़रिया अपनाने की बजाय यौन काउंसलिंग और यौन शिक्षा पर फोकस करने पर जोर दिया है। दरअसल, अभी लड़कियों की शादी की वैधानिक उम्र 18 साल है, जबकि लड़कों की 21 साल निर्धारित है। वैसे 1872 के पहले तक विवाह के लिए अपने देश में कोई कानून नहीं था। इस कारण बाल विवाह भी खूब होते थे। समाज सुधारकों की मांग पर अंग्रेज सरकार ने 1872 में नेटिव मैरिज एक्ट पारित किया। इस कानून के मुताबिक 14 वर्ष से कम उम्र वाली लड़कियों की शादी पर पाबंदी लगा दी गई। इसके बाद साल 1891 में सम्मति आयु अधिनियम पारित किया गया, जिसके तहत 12 वर्ष से कम आयु वाली लड़कियों के विवाह पर रोक लगा दी गई। बहुचर्चित शारदा अधिनियम 1930 में पारित हुआ। इस अधिनियम ने पहली बार शादी की उम्र को स्वास्थ्य के आधार पर तार्किक बनाने की कोशिश की। इसके तहत 18 वर्ष से कम आयु के लड़कों और 14 वर्ष से कम आयु की लड़कियों की शादी को अवैध घोषित कर दिया गया। इसके बाद आजादी के बाद 1954 में विशेष विवाह अधिनियम आया, जिसमें विवाह के लिए लड़कियों की उम्र 18 और लड़कों की उम्र 21 वर्ष निर्धारित की गई। बहरहाल, शादी के कानूनों में प्रस्तावित इस विवाद के बावजूद लगता नहीं कि सरकार पीछे हटने के मूड में है। हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मंडी में एक सभा में प्रधानमंत्री ने कह भी दिया कि जब हर मौके पर बराबरी की बात होती है तो शादी के लिए बराबरी की बात क्यों न हो।

आज के कार्टून

हुनरमंद बुनकर

जग्गी वासुदेव

एक समय था जब लगभग सारी दुनिया भारत में बनें वस्त्र पहनने की इच्छुक थी क्योंकि भारत में सबसे अच्छे वस्त्र बनते थे। इसके सबूत आज भी सीरिया, मिस्र की प्राचीन जगहों पर आप को मिल सकते हैं। आज भी जब बात वस्त्रों की होती है, तो दुनिया में ऐसा और कोई स्थान नहीं है जहां इतनी सारी बुनाइयां हैं, और कपड़ा रंगने और बनाने के इतने तरीके हैं, जितने हमारी संस्कृति में हैं। लेकिन हमारी स्वतंत्रता से लगभग 200 साल पहले के समय के दौरान, अंग्रेजों ने मैनचेस्टर के अपने कपड़े के कारखानों को चलाने के लिए व्यवस्थित ढंग से भारत के वस्त्र उद्योग को नष्ट कर दिया था। 1800 से 1860 के बीच के 60 वर्षों में भारत का वस्त्र निर्यात 94% कम हो गया था। 1830 में एक ब्रिटिश गवर्नर जनरल ने कहा था, 'बुनकरों की हड्डियों से भारत के मैदानी इलाके सफेद हो गए हैं' क्योंकि लाखों बुनकर मर गए थे। जो भी हो, हमारे पास आज भी कौशल है। भारत में 120 से भी ज्यादा बुनाइयां हैं। मैं जब 17 साल का था, मैंने कुछ समय अपने चाचा के साथ बिताया था, जहां हजारों रेशमी साड़ियां बुनी जाती थीं। हजारों धागे, बहुत बारीकी और कलात्मक ढंग से ज्यामितीय नमूनों में बुने जाते थे। वे जब बुन रहे होते थे तो उनके मन में हजारों गणनाएं चल रही होती थीं, और मैं कपड़े पर जादुई ढंग से उभरते फूलों को देख रहा होता था। हमें वैसे कपड़े पहनने चाहिए जो हमें आराम से रहने दें। आप अपने कपड़े बस 3 दिन के लिए बदल दें, और वैसे कपड़े पहन लें जो सन, पटसन, कपास या हेम्प से बने हों और देखिए, कैसा महसूस होता है। आप का शरीर स्वाभाविक रूप से आराम में आ जाएगा। इस अर्थ में यह भी महत्वपूर्ण है कि आप जो कपड़े पहन रहे हैं, वे जैविक यानी ऑर्गेनिक हों। लेकिन सारी दुनिया में पहने जाने वाले कपड़ों का 60 प्रतिशत भाग पोलीफाइबर (रासायनिक पदार्थ) से बनता है। अनुमान है कि एक दशक के अंदर लगभग 98 प्रतिशत कपड़ा सिंथेटिक होगा। धरती पर सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने वाली चीजों में फैशन दूसरे नम्बर पर आता है। सूक्ष्म कणों के रूप में पोलिफाइबर हमारे शरीर में आ रहा है, हमारी मिट्टी और पानी को विषाक्त कर रहा है और हमारे भोजन चक्र में भी प्रवेश कर रहा है।

सू-दोकू नवताल -2010

8	2			9				
3			7		5		1	
	7	9		3	4	5		2
2				5			7	4
4	5			1			8	6
7	1			8				3
5		1	9	7		6	3	
	3		1		8			5
				6			2	1

सू-दोकू -2009 का हल

9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 X 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।

बायें से दायें:-

1. 'जान की कसम सच कहते हैं हम' गीत वाली फिल्म-3
3. 'पहली पहली बार बलिये' गीत वाली अक्षय कुमार, प्रीति की फिल्म-3
5. आफताब शिवदासानी, युक्ता मुखी की 'तेरे प्यार का छाया नशा' गीत वाली फिल्म-2
7. 'तू मेरे पास भी है' गीत वाली डी. चक्रवर्ती, मनोज वाजपेयी, मनोज राजपाल, उर्मिला की फिल्म-2
9. फिल्म 'सत्यकाम' में धर्मेन्द्र के साथ नायिका कौन थी ?-3
11. गोविंदा, उर्मिला मातोंडकर की 'ये लड़की जवान हो गई' गीत वाली फिल्म-3
13. राकेश रोशन, विंदिया गोस्वामी की फिल्म-2,2
14. 'तेरे संग प्यार में' गीत वाली फिल्म-3
15. फिल्म 'जय संतोषी मां' के गीत 'मैं तो आरती उतारूं रे' की गायिका-2
17. सनी देओल, तब्बू, रीमा सेन अभिनीत फिल्म-2
18. मनोज कुमार, प्रेम चोपड़ा, सरिता अभिनीत फिल्म-3
21. 'चंदा मामा दूर के' गीत वाली फिल्म-3
23. रणधीर कपूर, बबीता की फिल्म-2
24. सनी देओल, रवीना टंडन की 'सैंया मान दिल की बात' गीतवाली फिल्म-3
27. फिल्म 'क्रोध' में सुनील शेट्टी के साथ नायिका कौन थी-2
28. फिल्म 'चला मुरारी हीरो बनने' का नायक कौन था ?-4
30. 'एक बेचारा प्यार का मारा' गीत वाली फिल्म-3
31. फिल्म 'पाप की कमाई' में सनी देओल के साथ नायिका -3
32. जीतेंद्र, जयाप्रदा की 'आईने के सौ टुकड़े' गीत वाली फिल्म-1

फिल्म वर्ग पहेली-2010

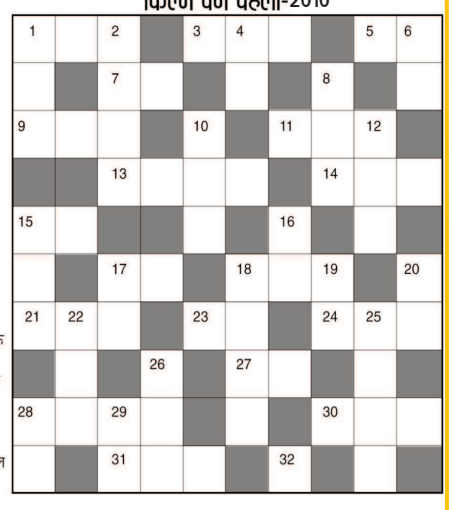

ऊपर से नीचे:-

1. 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली फिल्म-3
2. 'आ लग जा गले' गीत वाली फिल्म-2,2
4. विनोद मेहरा, रेखा की फिल्म-2
6. राजेंद्र कुमार, वैजयंती माला की फिल्म-2
8. 'तेरी उम्मीद तेरा इंतजार' गीत वाली ऋषि कपूर, शाहरुख, दिव्या भारती की फिल्म-3
10. अजय, अभिषेक, बिपाशा बसु की फिल्म-3
12. अशोक पिच्चर्स द्वारा निर्मित अशोक कुमार, किशोर कुमार, पद्मिनी की 1958 की एक फिल्म-3
15. शशि कपूर, शेखर सुमन, रेखा, नीना गुप्ता की फिल्म-3
16. फिल्म 'लव लव लव' में ऋषि कपूर के साथ नायिका कौन थी ?-2
17. 'नैनों में मेहबूब के' गीत वाली अजय देवगन, ट्विंकल खन्ना की फिल्म-2
18. मिथुन, जैकी, जूही, दिव्या भारती की 'ऐ सनम इतना बता' गीत वाली फिल्म-4
19. 'छम से वो आ जाए' गीत वाली संजय दत्त, अभिषेक, जायेद, एशा देओल, राइमा सेन, शिल्पा शेट्टी की फिल्म-2
20. धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की 'गैरों पे करम अपनों पे सितम' गीत वाली फिल्म-2
22. 'कल की हसीं मुलाकात के लिए' गीत वाली धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी की फिल्म-3
25. जैकी, अक्षय खन्ना, डिम्पल, मनीषा की 'आ कहीं दूर चले जाएं हम' गीत वाली फिल्म-4
26. साधना के डबल रोल वाली फिल्म 'मेरा साया' का नायक कौन था ?-3
28. 'बंदा ये बिंदास है' गीत वाली अमिताभ, मनोज वाजपेई, रवीना, नंदिता की फिल्म-2
29. 'ना ना मेहंदी ना मुझको लगाना' गीत वाली फिल्म 'चोरी चोरी' में अजय देवगन के साथ नायिका कौन थी ?-2

फिल्म वर्ग पहेली- 2009

बॉस हों पार्ट टाइमर तो ऐसे करें डील

जॉब के दौरान कई परिस्थितियों से दो चार होना पड़ता है। ऐसा हो सकता है कि कंपनी पार्ट टाइम बॉस को नियुक्त कर दे। ऐसी स्थिति में टीम की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। बॉस के साथ तालमेल बैठाकर उन्हें फैसले लेने होते हैं...

जब आपके ऑफिस में पार्ट टाइम काम करने वाले बॉस हों और आप फुल टाइमर एम्प्लॉइ हों, तो स्थिति थोड़ी सी नाजुक हो जाती है। ऐसे में पूरी टीम को बॉस के साथ बराबर टच में रहना होता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि टीम को फुल टाइमर बॉस की कमी महसूस होती है। टीम को कई मुद्दों पर बातचीत करने की जरूरत होती है। कई बार ऐसा होता है कि पार्ट टाइमर बॉस पूरा समय नहीं दे पाते हैं। आप अपनी कंपनी में ऐसी स्थिति का सामना कर रहे हैं, तो यहां पर दिए जाने वाले टिप्स कारगर साबित हो सकते हैं। आइए डालते हैं एक नजर –

मानसिकता सही रखें

एक्सपर्ट कहते हैं कि एक पार्ट टाइमर बॉस किसी संस्था में काम करता है, तो वहां पर काम करने वाले लोगों के मन में यह भावना विकसित हो सकती है कि वह पावर का दुरुपयोग तो नहीं कर रहे हैं। बॉस का पद जिम्मेदारी भरा पद होता है और कंपनी बॉस पर भी नजर रखती है। याद रखें कि इसके लिए कंपनी हमेशा ही अपने स्तर पर सही व्यक्ति का चुनाव करती है। ऐसे में यह है कि टीम भी सही मानसिकता के साथ बॉस को सहयोग दे और अपना काम करे। वह कॉरपोरेट जगत के वैल्यू को समझे।

कम्यूनिकेशन का होता है अहम रोल

जहां बॉस पार्ट टाइम काम करते हैं और उनके साथ काम करने वाले बाकी लोग फुल टाइम जॉब करते हैं, वहां पर कम्यूनिकेशन का रोल अहम हो जाता है। एक्सपर्ट मानते हैं कि ऐसी स्थिति में टीम को बॉस के साथ कम्यूनिकेशन लेवल हाई रखना पड़ता है। एक बार कम्यूनिकेशन करने का स्टाइल फिक्स हो जाता है, तो बाद में चीजों को बदल पाना आसान नहीं होता है। जब कम्यूनिकेशन सही रहेगा तो प्रॉब्लम का निपटारा भी पलक झपकते ही हो जाएगा। ऐसे में पार्ट टाइमर बॉस के संग भी टीम बेहतर रिजल्ट दे सकती है।

फैसला लेने की कला सीखें

आप ऐसी जगह काम कर रहे हैं, जहां फुल टाइमर बॉस नहीं हैं, तो जरूरी है कि टीम का हर एक सदस्य खुद पर भरोसा दिखाए और फैसला लेने की कला सीखे। याद रखें कि जब बॉस फुल टाइमर नहीं होते हैं, तो सबसे ज्यादा दिक्कत फैसला लेने में ही होती है। वर्कप्लेस पर कई बार आपको पलक झपकते ही बड़े फैसले लेने होते हैं। दूसरा बड़ा मुद्दा यह होता है कि आप आज के कॉम्पिटिशन भरे माहौल में टीम में तेजी कैसे लाएं। जॉब एक्सपर्ट कहते हैं कि इससे निपटने के लिए कंपनियों को चाहिए कि वह फैसला लेने के अधिकार को बांट दे। इससे जहां टीम के सदस्यों में कॉन्फिडेंस पैदा होता है, वहीं समय के भीतर फैसला लेने से काम में तेजी भी आती है।

...तो आप भी हैं कामयाब लीडर

एक लीडर में अपनी बात को असरदार तरीके से दूसरों तक पहुंचाने का हुनर आना चाहिए। एक लीडर, अगर वह अपनी बात अपने साथ काम करने वालों को बेहतर तरीके से कम्यूनिकेट कर पाने में समर्थ है, तो इससे कामकाजी माहौल ऊर्जा से भर जाता है, लोग उत्साह से काम में जुटते हैं और उनकी रचनात्मकता काम में झलकने लगती है। एक दूरदर्शी सोच रखने वाला लीडर एक जुनूनी टीम बनाने में यकीन रखता है। यह टीम एक समान लक्ष्यों के लिए पूरे जोशोखरोश से काम करती है। अपना कारोबार फैलाती किसी भी कंपनी को एक मजबूत मैनेजमेंट के साथ-साथ ऐसी टीम की भी दरकार रहती है, जो साथ काम करने वाले लोगों के बीच आपसी एकता, यकीन और आदर की बुनियाद पर बनी हो। कामयाबी का राज है, कामकाज में साफ-सुथरापन। एक कामयाब लीडर इस बात की अहमियत जानता है और अच्छे कामकाज के लिए अपने एंप्लॉई के साथ एक बेहतर समझ विकसित करता है। इससे न सिर्फ कामकाज का बिना किसी रुकावट के निपटारा होता जाता है, बल्कि टीम के भीतर एक खुशनुमा कामकाजी माहौल भी बरकरार रहता है।

इन बातों का ध्यान रखें तो कदम चूमेगी कामयाबी

जब आप अपने लक्ष्य के प्रति स्पष्ट होते हैं, तो यह जान जाते हैं कि आप कौन हैं? आप क्या हैं? आपको क्या करना है और आप क्या चाहते हैं? अगर ये चीजें आपके दिमाग में साफ हैं, तो आपकी सफलता का पहला चरण सुनिश्चित हो जाता है।

बनें योग्य

कामयाब होने के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि आप खुद को योग्य बनाएं। क्योंकि आप तब तक ऊपर नहीं चढ़ सकते, जब तककि आप में योग्यता नहीं हो। इसलिए पहले खुद को योग्य बनाना जरूरी होता है। इसके लिए लगातार प्रयत्न करना पड़ेगा। याद रखें कि कोशिश करने वालों की कभी भी हार नहीं होती है।

दबाव झेलने की क्षमता

जब जिम्मेदारी बढ़ेगी तो दबाव के साथ-साथ अवरोध भी उत्पन्न होगा। ऐसे में इस तरह की विपरीत परिस्थितियों को झेलने की क्षमता आपमें जरूर होनी चाहिए। वैसे जब आपको एवरेस्ट पर चढ़ाई करनी हो तो रास्ते में दिक्कतें तो आएंगी ही। दिक्कतों का सामना करने से ही सफलता का दरवाजा खुलता है।

भरपूर एकाग्रता जरूरी

इसके बिना तो आप साइकल भी नहीं चला सकते। एकाग्रता एक ऐसी चीज है, जो हर जगह काम आती है। आप अपने काम में इसके द्वारा ही परफेक्शन लाते हैं। किसी भी काम को साधारण से असाधारण बनाने के लिए एकाग्रता की जरूरत होती है। इसके माध्यम से आप बड़े से बड़े लक्ष्य को भेद सकते हैं।

रचनात्मकता भी जरूरी

एक प्रफेशनल की सफलता में उसकी रचनात्मकता का काफी अहम योगदान होा है। इसलिए इस ओर ध्यान देना जरूरी है।

साहस बनाए रखें

कहते हैं रिस्क लेने के बाद ही आगे बढ़ने का रास्ता खुलता है। इसके लिए साहस सबसे जरूरी चीज है। किसी ने सही कहा है कि हिम्मत रखने वालों की कभी हार नहीं होती इसलिए जीतने के लिए साहस बहुत जरूरी है।

हार्डवेयर फील्ड में खूब हैं जॉब, मस्त सैलरी

आज शायद ही ऐसा कोई ऑफिस हो, जहां का कामकाज कंप्यूटर पर आधारित न हो। इसके अलावा, घर, स्कूल आदि जगहों पर भी सभी कामकाज कंप्यूटर पर ही किए जाते हैं। अगर ये सुचारू रूप से काम न करें, तो सारा कामकाज अचानक ठप हो सकता है। बैंकों और अन्य सरकारी कार्यालयों में नेटवर्क फेल होने की वजह से काम ठप रहने की खबरें आपने अक्सर पढ़ी होंगी, तब इस नेटवर्क को सही करने के लिए हार्डवेयर प्रफेशनल्स की ही मदद ली जाती है। नेटवर्किंग दरअसल कंप्यूटरों को आपस में जोड़कर ऐसा जाल बनाने का फील्ड है जिसमें कोई संस्थान काम कर सके। कुल मिलाकर, कंप्यूटर इंस्टॉलेशन से लेकर, इसकी मेंटेनेंस और रोजमर्रा के ऐडमिनिस्ट्रेशन तक का सारा जिम्मा कंप्यूटर सपोर्ट स्पेशलिस्ट्स यानी हार्डवेयर इंजिनियर्स के जिम्मे होता है।

कोर्स

हार्डवेयर इंजिनियर बनने के लिए मुख्य रूप से दो बेसिक कोर्स करने पड़ते हैं। पहला, हार्डवेयर और दूसरा बेसिक नेटवर्किंग। हार्डवेयर रिलेटिड कोर्स से कंप्यूटर पार्ट्स के बारे में तमाम तकनीकी जानकारी मिलती है। एक हार्डवेयर इंजिनियर या सिस्टम ऐडमिनिस्ट्रेटर बनने के लिए ये दोनों कोर्स करने बेहद जरूरी हैं। नेटवर्किंग में इससे आगे कोई एक्सपर्ट बनना हो, तो अपनी पसंद के हिसाब से कुछ और बेसिक कोर्स करने होंगे, जैसे - लैन (लोकल एरिया नेटवर्क) और वैन (वाइड एरिया नेटवर्क) से जुड़े कोर्स। नेटवर्किंग से जुड़े कोर्स कराने के लिए कई सरकारी और प्राइवेट संस्थान हैं, जिन्होंने इन कोर्सेज के लिए अपनी अलग पहचान बनाई है। नेटवर्किंग सीखने के लिए तीन तरीके हैं - पहला ऑनलाइन स्टडी मटीरियल की मदद से खुद पढ़ाई, दूसरा ऐसे इंस्टिट्यूट्स जो किसी प्रोग्राम से जुड़े नहीं है और तीसरा सर्टिफाइड प्रोग्राम।

जॉब की कमी नहीं

एक्सपर्ट्स बताते हैं कि नेटवर्किंग में कोर्स करने के बाद कंप्यूटर सपोर्ट स्पेशलिस्ट, हेल्प डेस्क टेक्निशन, नेटवर्क या सिस्टम ऐडमिनिस्ट्रेटर, कंप्यूटर सिक्योरिटी स्पेशलिस्ट के रूप में करियर बना सकते हैं। आज इन एक्सपर्ट्स की जरूरत लगभग हर संस्थान में होती है। फिर चाहे वह कंप्यूटर और डेटा प्रोसेसिंग यूनिट हों, बैंक या अन्य सरकारी कार्यालय, कोई इंडस्ट्री या और कोई छोटी-बड़ी फर्म। जहां भी कामकाज कंप्यूटर आधारित है, वहां इन तकनीकी विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती है। सरकारें जिस तरह ई-गवर्नेंस पर जोर दे रही हैं, उससे यह फील्ड और भी हॉट बनता जा रहा है। इसके चलते स्टेट वाइड एरिया नेटवर्क और डाटा सेंटर जैसे कई नए फील्ड खुल रहे हैं। कहा जा सकता है कि जब तक कंप्यूटर पर काम होता रहेगा, इन विशेषज्ञों की जरूरत पड़ती रहेगी। ये किसी भी कंपनी के लिए नेटवर्क और कंप्यूटर सिस्टम की देखभाल से लेकर, एंप्लायीज और कस्टमर्स की तकनीकी जिज्ञासाओं को शांत करने तक का काम करते हैं। एंट्री लेवल पर आपकी जिम्मेदारी केवल नेटवर्क और कंप्यूटर मेंटेनेंस की हो सकती है, लेकिन अनुभव के साथ आपको किसी कंपनी के लिए इंट्रानेट आदि डिवेलप करने का जिम्मा भी दिया जा सकता है।

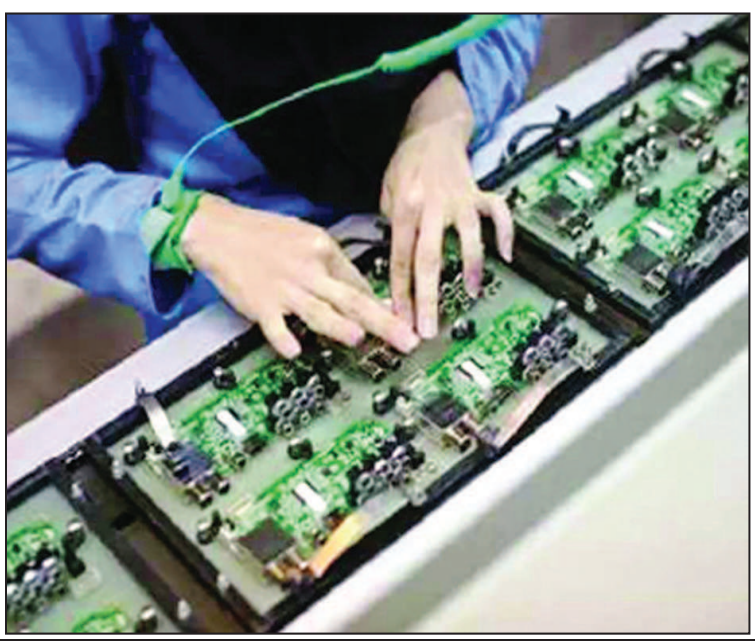

मनी मैटर्स

बरसों से आईटी फील्ड में अच्छी-खासी सैलरी रही है। हार्डवेयर प्रफेशनल्स के लिए सॉफ्टवेयर प्रफेशनल्स की तरह मौकों की कोई कमी नहीं है। एंट्री लेवल पर आप 25 से 35,000 रुपये महीने की जॉब पा सकते हैं। अनुभव और समय के साथ इसमें बढ़ोतरी होगी।

ईटीओ मोटर्स ने वितरण कंपनियों से हाथ मिलाया

मुंबई । इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) समाधान और सेवा देने वाली कंपनी ईटीओ मोटर्स ने कहा कि दिल्ली में अगले दो-तीन साल में 3,000 ईवी चार्जिंग स्टेशन लगाने के लिए वितरण कंपनियों बीएसईएस और टाटा पावर डीडीएल के साथ भागीदारी की है। ईटीओ मोटर्स ने कहा कि सस्ती दर पर तीन साल के लिये ईवी चर्जिंग स्टेशन लगाने को लेकर कंपनी का चयन दिल्ली की वितरण कंपनियों ....बीएसईएस राजधानी, बीएसईएस यमुना और टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रिब्यूशन लि.(टाटा पावर डीडीएल) ने किया है। इसके लिए तीनों वितरण कंपनियों की तरफ से बीएसईएस राजधानी ने जुलाई, 2021 में निविदा जारी की थी। बयान के अनुसार, कंपनी पहले ही देशभर में 30 मेगावॉट क्षमता से अधिक का ईवी चार्जिंग बुनियादी ढांचा स्थापित कर चुकी है।बीएसईएस और टाटा पावर डीडीएल के साथ यह साझेदारी देश को चार्जिंग बुनियादी ढांचे की चुनौतियों से उबरने में मदद करने के लिए स्मार्ट और किफायती चार्जिंग समाधान प्रदान करने की कंपनी की प्रतिबद्धता के अनुरूप है। ईटीओ मोटर्स ने कहा,अगले 2-3 साल में लगभग 2,000-3,000 ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करने के लिए बीएसईएस और टाटा पावर डीडीएल के साथ हाथ मिलाया है...अगले पांच साल में क्षेत्र में 10,000 ईवी चार्जिंग स्टेशन स्थापित करेगी है।''

वार्डविजार्ड इनोवेशंस की ईवी बिक्री दिसंबर में 548 प्रतिशत बढ़ी

मुंबई । बिजली से चलने वाले दोपहिया वाहन बनाने वाली कंपनी वार्डविजार्ड इनोवेशंस एंड मोबिलिटी लिमिटेड की बिक्री दिसंबर, 2021 में 548 प्रतिशत बढ़कर 3,860 इकाई पर पहुंच चुकी हैं। कंपनी ने कहा कि पहली बार अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में उसकी बिक्री का आंकड़ा 10,000 इकाई पर पहुंचा है। कंपनी ने कहा कि इलेक्ट्रिक वाहनों के चलन में वृद्धि के साथ सालाना आधार पर दिसंबर, 2021 उसकी बिक्री 548 प्रतिशत बढ़कर 3,860 इकाई पर पहुंच गई। यह दिसंबर, 2020 में 595 इकाई रही थी। कंपनी चालू वित्त वर्ष की अप्रैल-दिसंबर अवधि में अबतक 17,376 ई-स्कूटर और मोटरसाइकिलें बेच चुकी है, जो 2020-21 की समान अवधि की तुलना में 570 प्रतिशत ज्यादा है।कंपनी के अधिकारी ने कहा, ''शहरी और अर्द्ध-शहरी दोनों क्षेत्रों में इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन बड़ी संख्या में घरों का हिस्सा बन रहे हैं। तेजी गति वाले स्कूटर मॉडल की मांग अधिक है।कंपनी अपना पहला 'भारत में निर्मित' द्रुत गति का स्कूटर मॉडल आगामी वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट में पेश करेगी।''

डुकाटी साल 2022 भारतीय बाजार में 11 नई मोटरसाइकिलें उतारेगी

मुंबई। इटली की सुपरबाइक विनिर्माता कंपनी डुकाटी साल 2022 में भारतीय बाजार में 11 नई मोटरसाइकिलें उतारेगी। कंपनी ने बताया कि इन नई मोटरसाइकलों में... स्क्रैम्बलर 800 अर्बन मोटर्ड, स्ट्रीटफाइटर वी2, मल्टीस्ट्राडा वी2, मल्टीस्ट्राडा वी4 पाइक्स पीक, स्ट्रीटफाइटर वी4 एसपी, एमवाई22 पैनिगेल वी4 और द एक्स जैसे सभी नए मॉडल शामिल हैं। डुकाटी इंडिया के प्रबंध निदेशक विपुल चंद्रा ने कहा,हमारे द्वारा 2021 की शुरुआत में 15 नए मॉडल उतारने करने का वादा किया था। वाहन क्षेत्र में उथल-पुथल के बावजूद हम उस वादे को निभाने में कामयाब रहे। अब भारत में भारत हमारी चरण-छह (बीएस-6) श्रेणी की संख्या पूरी हो चुकी है। वहीं कंपनी ने बताया कि 2022 की पहली तिमाही में स्क्रैम्बलर 1100 ट्रिब्यूट प्रो को पेश किया जाएगा। इसके बाद पैनिगेल वी2 बेलिस का संस्करण आएगा।

साल के दूसरे कारोबारी दिन भी शेयर बाजार उछाल के साथ बंद

मुंबई (एजेंसी)।

मुम्बई शेयर बाजार में साल के दूसरे कारोबारी दिन मंगलवार को भी तेजी रही। वहीं पहले कारोबारी दिन भी बाजार भारी उछाल के साथ बंद हुआ था। दूसरे कारोबारी दिन बाजार में यह बढ़त दुनिया भर के बाजारों से मिले अच्छे संकेतों के साथ ही भारी लिवाली (खरीददारी) से आई है। दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स अंत में 672.71 अंक करीब 1.14 फीसदी ऊपर आकर 59,855.93 अंक पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 179.55 अंक तकरीबन 1.02 फीसदी बढ़कर 17,805.25 अंक पर पहुंच गया। सेंसेक्स के शेयरों में सबसे ज्यादा लाभ में एनटीपीसी, पावर ग्रिड, एसबीआई, टाइटन, रिलायंस इंडस्ट्रीज, बजाज फाइनेंस और एक्सिस बैंक के शेयर रहे। वहीं दूसरी ओर सन फार्मा, अल्ट्राटेक सीमेंट, इंडसइंड बैंक और डॉ. रेड्डीज के शेयर नीचे

आये हैं। बाजार जानकारों के अनुसार अमेरिकी शेयर बाजार में आये जबरदस्त उछाल का प्रभाव दुनिया भर के बाजारों पर पड़ा है। इसी कारण भारतीय बाजार भी ऊपर आया है। विदेशी संस्थागत निवेशकों की लिवाली से भी बाजार में सकारात्मक माहौल है। हालांकि चिंता का कारण है। वहीं इससे पहले आज सुबह बाजार बढ़त के साथ खुला। इसके बाद भी बाजार में तेजी लगातार बनी रही।

एप्पल 3 ट्रिलियन डॉलर मार्केट वैल्यू वाली पहली कंपनी बनी, रचा कीर्तिमान

न्यूयॉर्क । दुनिया की शीर्ष मशहूर तकनीक प्राद्यौगिकी कंपनी एप्पल ने कीर्तिमान रच दिया है। सोमवार को कंपनी की 3 ट्रिलियन डॉलर मार्केट वैल्यू हो गई। वॉलमार्ट, डिज्नी, नेटफ्लिक्स, नाइकी, एक्सॉन मोबिल, कोका-कोला, कॉमकास्ट, मॉर्गन स्टेनली, मैकडॉनल्ड्स, एटीएंडटी, बोइंग, आईबीएम और फोर्ड की तुलना में एप्पल की मार्केट वैल्यू अभी भी कहीं ज्यादा है। 1976 में शुरू हुई एपल ने अगस्त 2018 में एक ट्रिलियन डॉलर का जादुई आंकड़ा छुआ था। उसे यह उपलब्धि हासिल करने में 42 साल का लंबा सफर तय करना पड़ा था। इसके साथ ही दो साल बाद कंपनी की वैल्यू 2 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा हो गई। जबकि अगले ट्रिलियन यानी तीन ट्रिलियन मार्केट वैल्यू होने में कंपनी को सिर्फ 16 महीने और 15 दिन लगे। एसएंडपी डॉव जोन्स इंडेक्स में वैल्यूएशन पर नजर रखने वाले एक विश्लेषक हॉवर्ड सिल्वरब्लैट के अनुसार एप्पल अब एसएंडपी 500 के कुल मूल्य का लगभग 7 प्रतिशत है जो 1984 में आईबीएम के 6.4 प्रतिशत के रिकॉर्ड को तोड़ता है। उन्होंने कहा, अकेले एप्पल सभी वैश्विक शेयर बाजारों के मूल्य का लगभग 3 ।3 प्रतिशत है।

रिजर्व बैंक ने 200 रुपए तक के लेनदेन को दी ऑफलाइन भुगतान की अनुमति

नई दिल्ली (एजेंसी)।

भारतीय रिजर्व बैंक ने 200 रुपए तक के लेनदेन को ऑफलाइन भुगतान की अनुमति दी है। गांवों और कस्बों में डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक ने एक रूपरेखा जारी की। इसके तहत प्रति लेनदेन 200 रुपए तक के ऑफलाइन भुगतान की अनुमति दी गई है। इसकी कुल सीमा 2,000 रुपए होगी। ऑफलाइन डिजिटल भुगतान से तात्पर्य ऐसे लेनदेन से है, जिसमें इंटरनेट या दूरसंचार कनेक्टिविटी की जरूरत नहीं होती। ऑफलाइन तरीके में भुगतान आमने-सामने किसी भी माध्यम मसलन कार्ड, वॉलेट और मोबाइल उपकरणों से किया जा सकता है। केंद्रीय बैंक ने कहा कि इन लेनदेनों के लिए अतिरिक्त सत्यापन कारक (एएफए) की जरूरत नहीं होगी। चूंकि इनमें भुगतान ऑफलाइन होगा, इसलिए ग्राहकों को एसएमएस या ई-मेल के जरिए 'अलर्ट' कुछ समय बाद मिलेगा। ऑफलाइन तरीके से छोटे मूल्य के डिजिटल भुगतान सुविधा की रूपरेखा में कहा गया है, 'इसमें प्रत्येक लेनदेन की सीमा 200 रुपए होगी। इसकी कुल सीमा 2,000 रुपए होगी....' केंद्रीय बैंक ने कहा कि देश के विभिन्न हिस्सों में सितंबर, 2020 से जून, 2021 के दौरान पायलट आधार पर ऑफलाइन लेनदेन शुरू किया गया था। इसी पर मिली प्रतिक्रिया के आधार पर यह रूपरेखा तैयार की गई है। रिजर्व बैंक ने कहा, 'ऑफलाइन लेनदेन से कमजोर इंटरनेट कनेक्टिविटी वाले क्षेत्रों में डिजिटल लेनदेन को प्रोत्साहन मिलेगा। विशेषरूप से गांवों और कस्बों में। यह व्यवस्था तत्काल प्रभाव से लागू हो गई है।' केंद्रीय बैंक ने स्पष्ट किया है कि ऑफलाइन भुगतान का इस्तेमाल ग्राहकों की अनुमति के बाद ही किया जा सकता है।

सेबी के संशोधित आईपीओ नियम बाजार को कर सकते हैं प्रभावित

1अप्रैल के बाद होंगे लागू

नई दिल्ली (एजेंसी)।

पूंजी बाजार नियामक संस्था भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय (सेबी) ने आईपीओ से फंड एकत्र करने वाली कंपनियों के लिए कुछ नए नियम निर्धारित किए हैं। इन नियमों के तहत आईपीओ से फंड जुटाने वाली कंपनियां अब सिर्फ 25 फीसदी इस्तेमाल इन-ऑर्गेनिक कार्यों में कर सकेंगी, जबकि 75 फीसदी राशि उन्हें कारोबार विस्तार में लगानी पड़ेगी। आईपीओ में 20 फीसदी हिस्सेदारी रखने वाले प्रवर्तकों की लॉक इन अवधि 3 साल से घटाकर 18 महीने कर दी है, जबकि 20 फीसदी से ज्यादा हिस्सेदारी पर लॉक इन अवधि एक साल से घटाकर 6 महीने हो गई है। ये नियम 1 अप्रैल 2022 के बाद आने वाले आईपीओ पर लागू होंगे। एंकर इन्वैस्टर्स के लिए अब लॉक-इन पीरियड को 30 दिन से बढ़ाकर 90 दिन कर दिया गया है। सेबी के इस कदम से लिस्टिंग के बाद नई कंपनियों के शेयरों के उतार-चढ़ाव पर लगाम लगेगी, जिससे रिटेल इन्वैस्टर्स का निवेश अधिक सुरक्षित हो जाएगा। हाल के समय में कुछ ऐसे मामले देखने को मिले, जिनमें एंकर इन्वैस्टर्स के एग्जिट करते ही शेयर प्राइस धड़ाम हो गया। इसका खमियाजा रिटेल इन्वैस्टर्स को भुगतना पड़ा और उनका निवेश एक झटके में घाटे में चला गया। जोमैटो, पेटीएम और नायका का आई।पी।ओ। इसके उदाहरण हैं। एक महीने का लॉक-इन पीरियड खत्म होते ही इन कंपनियों के एंकर इन्स्टर्स ने अपनी हिस्सेदारी ऑफ लोड कर दी। इससे ओपन मार्केट में शेयर की कीमतें तुरंत भरभरा गईं। जोमैटो के मामले में एंकर इन्वैस्टर्स की ऑफ लोडिंग के बाद शेयर प्राइस 9 फीसदी गिर गया। पेटीएम के मामले में तो कीमतें एक झटके में 13 फीसदी नीचे आ गईं। नए बदलाव के बाद इस तरह की गिरावट पर लगाम लगेगी। अब एंकर इन्वैस्टर्स को 90 दिनों तक कम-से-कम 50 फीसदी हिस्सेदारी बनाकर रखनी होगी। एंकर इन्वैस्टर्स के लिए लिस्टिंग के दिन से लेकर अगले एक महीने तक का पुराना लॉक-इन लागू रहेगा। इसके बाद अगले दो महीने के लिए आधे शेयर पर लॉक-इन लगा रहेगा। इसका मतलब हुआ कि अब ऐसे इन्वैस्टर लिस्टिंग के एक महीने बाद भी सिर्फ 50 फीसदी ऑफ लोडिंग कर पाएंगे। यह नियम 1 अप्रैल 2022 से लागू होगा। इसके अलावा सेबी ने प्रैफरेंशियल इश्यू के लिए लॉक-इन पीरियड में भी बदलाव किया है। ऐसे मामलों में इश्यू के बाद के पेड-अप कैपिटल के 20 फीसदी तक का अलॉटमैंट पाने वाले प्रमोटर्स के लिए लॉक-इन पीरियड को 3 साल से घटाकर 18 महीने कर दिया गया है। इसी तरह जिन प्रमोटर्स के पास 20 फीसदी से ज्यादा अलॉटेड शेयर रहेंगे, उनके लिए लॉक-इन पीरियड अब एक साल के बजाय 6 महीने का रहेगा। नॉन-प्रमोटर इन्वैस्टर के लिए अब एक साल की जगह छह महीने का लॉक-इन पीरियड होगा। सेबी ने फ्लोर प्राइस से लेकर आईपीओ से जुटाए गए फंड के इस्तेमाल तक नियमों में बदलाव किया है। अब आईपीओ से मिले पूरे पैसे के खर्च का हिसाब रखा जाएगा। कंपनियां आईपीओ से मिले फंड का 25 फीसदी हिस्सा ही विलय व अधिग्रहण पर खर्च कर पाएंगी।

एप्पल : आईफोन 14 में मिलेगी पंच-होल स्क्रीन, नहीं होगी स्क्रीन नॉच डिस्प्ले

सैन फ्रांसिस्को (एजेंसी)।

एप्पल सितंबर में चार नए हैंडसेट आईफोन 14, आईफोन 14 मैक्स, आईफोन 14 मैक्स के साथ-साथ, आईफोन 14 प्रो मैक्स लॉन्च करने की योजना बना रहा है। अब एक नई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि आईफोन 14 होल-पंच डिस्प्ले के साथ आ सकता है जो 5जी कनेक्टिविटी और एक अपडेटेड आईफोन एसई के साथ नॉच को खत्म कर देगा। एप्पलइंसाइडर की रिपोर्ट के मुताबिक, मार्क गुरमन के 'पावर ऑन' न्यूजलेटर के अनुसार, एप्पल एक होल-पंच स्क्रीन पेश करने की योजना बना रहा है, जो एक पूर्ण नॉच का उपयोग किए बिना कैमरे के माध्यम से शाइन के लिए एक कॉम्पैक्ट विंडो बनाता है। आईफोन निर्माता अपने प्रमुख उपकरणों पर फेस आईडी का उपयोग करते रहने के विकल्प के साथ आ सकता है। इसके अलावा, गुरमन ने यह भी दावा किया कि आईफोन एसई को एक अपडेट मिलेगा जो एप्पल के एंट्री-लेवल आईफोन में 5जी कनेक्टिविटी जोड़ देगा। इसके अलावा, एप्पल सितंबर तक बिना सिम स्लॉट के आईफोन मॉडल लॉन्च करने की भी योजना बना रहा है। आईफोन निर्माता अपने प्रमुख उपकरणों पर फेस आईडी का उपयोग करते रहने के विकल्प के साथ आ सकता है। इसके अलावा, गुरमन ने यह भी दावा किया कि आईफोन एसई को एक अपडेट मिलेगा जो एप्पल के एंट्री-लेवल आईफोन में 5जी कनेक्टिविटी जोड़ देगा। इसके अलावा, एप्पल सितंबर तक बिना सिम स्लॉट के आईफोन मॉडल लॉन्च करने की भी योजना बना रहा है।हालांकि, मैकरियूमर्स की एक नई रिपोर्ट में कहा गया है कि एप्पल ने प्रमुख अमेरिकी वाहकों को सितंबर 2022 तक ईसिम-ओन्ली स्मार्टफोन लॉन्च करने की तैयारी करने की सलाह दी है। यह संभव है कि मूल रूप से अफवाह के रूप में कुछ आईफोन 15 मॉडल

के बजाय एप्पल कुछ आईफोन 14 मॉडल से शुरू होने वाले भौतिक सिम कार्ड स्लॉट को हटा सकता है।यह भी कहा गया है कि दो ई-सिम कार्डों के लिए समर्थन होगा, जिससे डुयल सिम कार्यक्षमता सुनिश्चित होगी। सिम कार्ड स्लॉट को हटाने से वॉटर रेसिस्टेंस में और सुधार हो सकता है। अगली फ्लैगशिप सीरीज, आईफोन 14 लाइन-अप, 2 टीबी तक की स्टोरेज के साथ आएगी। एप्पले अगले साल के आईफोन के लिए क्यूएलसी फ्लैश स्टोरेज को अपनाएगा और नई स्टोरेज तकनीक के लिए यह क्षमता को 2 टीबी तक बढ़ा देगा।

यस बैंक का शुद्ध ऋण चार प्रतिशत बढ़कर 1,76,422 करोड़ रुपये रहा

मुंबई (एजेंसी)।

देश के निजी बैंक में शुमार यस बैंक का शुद्ध ऋण या अग्रिम 31 दिसंबर, 2021 तक लगभग चार प्रतिशत बढ़कर 1,76,422 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। यह शुद्ध अग्रिम का शुरुआती आंकड़ा है। बैंक ने बताया कि 31 दिसंबर, 2020 तक उसका शुद्ध ऋण 1,69,721 करोड़ रुपये था। बैंक द्वारा जारी अस्थायी आंकड़ों के अनुसार, 31 दिसंबर को समाप्त तिमाही के दौरान सकल खुदरा ऋण वितरण 9,233 करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जो इससे एक साल पहले की इसी तिमाही में 7,470 करोड़ रुपये था। यस बैंक ने बताया कि दिसंबर, 2021 के अंत में बैंक की जमा सालाना आधार पर 26 प्रतिशत बढ़कर 1,84,289 करोड़ रुपये हो गई। एक साल पहले की इसी अवधि में यह 146,233 करोड़ रुपये थी। वही बैंक का ऋण से जमा अनुपात 31 दिसंबर, 2021 तक 95.7 प्रतिशत पर आ गया, जबकि एक साल पहले की समान अवधि में यह 116.1 प्रतिशत था।

नए साल में एलन मस्क का खजाना बढ़ा, कमाए ढाई लाख करोड़ रुपए

नई दिल्ली (एजेंसी)।

अमेरिकी कारोबारी और दुनिया के सबसे धनाढ्य शख्स एलन मस्क के लिए नए साल में लक्ष्मी प्रसन्न रही। साल के पहले कारोबारी दिन उनकी इलेक्ट्रिक कार कंपनी टेस्ला के शेयरों में 14 फीसदी तेजी आई। इससे मस्क की नेटवर्थ में एक दिन में 33.8 अरब डॉलर यानी करीब 2,51,715 करोड़ रुपए की बढ़ोतरी हुई। ब्लूमबर्ग बिलेनियर्स इनडैक्स के मुताबिक अब उनकी नेटवर्थ 304 अरब डॉलर पहुंच गई है। दुनिया की सबसे मूल्यवान ऑटो कंपनी टेस्ला ने चौथी तिमाही में कंपनी ने रेकॉर्ड लिवरी की। इससे कंपनी का शेयर सोमवार को 13.5 फीसदी की तेजी के साथ 1,199.78 डॉलर पर पहुंच गया। यह करीब 10 महीने में इसकी एक दिन में सबसे बड़ी छलांग है। जानकारों का कहना है कि 2022 में भी टेस्ला का प्रदर्शन दमदार रहने की उम्मीद है। बर्लिन और टेक्सस में नई फैक्टरीज के बनने से कंपनी के उत्पादन में बढ़ोतरी होगी और डिलिवरी में तेजी आएगी। दूसरी ऑटो कंपनियों की तरह टेस्ला को भी कलपुर्जों की कमी से जूझना पड़ रहा है और साथ ही महामारी के कारण उत्पादन प्रभावित हुआ है। लेकिन कंपनी ने अपने सॉफ्टवेयर को नए सिरे से प्रोग्राम करके कई चुनौतियां से पार पा लिया है। चौथी तिमाही में टेस्ला ने 308,600 वीकल्स डिलिवर किए जिनमें मॉडल 3 कॉम्पैक्ट कार और मॉडल वाई स्पोर्ट्स यूटिलिटी वीकल्स और फ्लैगशिप मॉडल एस मॉडल एक्स वीकल्स शामिल हैं। हालांकि जानकारों का मानना है कि 2022 में टेस्ला के लिए चुनौतियां बढ़ेंगी क्योंकि कई स्टार्टअप कंपनियां अपनी पहली ईवी कार उतारने की तैयारी में हैं। फोर्ड और जनरल मोटर्स जैसी दिग्गज कंपनियां भी इलेक्ट्रिक कारों पर जोर दे रही हैं। कुछ एनालिस्ट्स मानते हैं कि टेस्ला के शेयर की वैल्यू जरूरत से ज्यादा है। इसकी वजह यह है कि उसका उत्पादन बहुत कम है। कंपनी ने पिछले साल करीब 930,000 गाड़ियां बनाई जबकि टोयोटा मोटर की इस साल 90 लाख गाड़ियां बनाने की योजना है। टेस्ला दुनिया की सबसे मूल्यवान ऑटो कंपनी है और उसका मार्केट कैप टोयोटा मोटर से चार गुना अधिक है।

रुपया गिरावट के साथ बंद

मुंबई (एजेंसी)।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबल मंगलवार को भारतीय रुपय नीचे आया है। विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपया 29 पैसे का नुकसान दिखाते हु 74.57 (अस्थायी) रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 74.49 प्रति डॉलर पर खुला। कारोबार के दौरान यह 74.46 के उच्च स्तर तक पहुंचा और 74.61 के निम्न स्तर तक गया। अंत में यह अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 29 पैसे की गिरावट दिखाते हुए 74.57 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं इसका पिछला बंद भाव 74.28 प्रति डॉलर था। इसी बीच छह मुद्राओं की तुलना में डॉलर का रुख दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.02 फीसदी बढ़कर 96.23 पहुंच गया।

कुशल श्रमिकों की कमी अगली बड़ी चिप सप्लाई से जुड़ी समस्या हो सकती है : रिपोर्ट

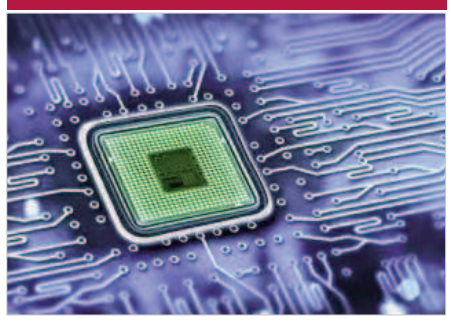

सैन फ्रांसिस्को (एजेंसी):

चिप की कमी के बीच, वैश्विक चिप निर्माता कंपनियों को वर्तमान में सेमिकंडक्टर प्रोडक्शन सुविधाओं के लिए प्रतिभावान श्रमिकों की किल्लत का सामना करना पड़ सकता है। मीडिया रिपोर्टों में इसकी जानकारी दी गई है। चिपमेकर कुशल श्रमिकों की घटती आपूर्ति के बारे में चिंतित हैं। यह एक समस्या है जो व्यापक श्रम की कमी, इलेक्ट्रॉनिक्स की मांग में वृद्धि और चिप बनाने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए सरकारों के बीच एक वॉल स्ट्रीट जर्नल, ऐप्पलइनसाइडर की रिपोर्ट का हवाला देते हुए बढ़ गई है। हालांकि चिपमेकिंग सुविधाएं अत्यधिक स्वचालित हैं, फिर भी उन्हें अर्धचालक निर्माण प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले उच्च तकनीक वाले उपकरणों को संचालित करने के लिए कुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है।चिप निर्माता वैश्विक चिप आपूर्ति मुद्दों के कारण अपने निर्माण पदचिह्नें को बढ़ा रहे हैं। इंटेल, ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी (टीएसएमसी), सैमसंग और अन्य चिप कंपनियों ने सभी प्रमुख विस्तार योजनाओं का वादा किया है।रिपोर्ट में कहा गया कि हालांकि, उत्पादन क्षमताओं में इस वृद्धि के लिए कुशल श्रम की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, अमेरिका में, उद्योग को अनुमानित विस्तार को पूरा करने के लिए 2025 तक 70,000 से 90,000 सिलिकॉन श्रमिकों को जोड़ने की आवश्यकता होगी।

कोरोनाकाल में ऑडी ने भारत में बेची दोगुना कारें, बजाज ऑटो बिक्री में पिछड़ा

नई दिल्ली। (एजेंसी)

मशहूर जर्मनी की लक्जरी कार ऑडी की करोनाकाल 2021 में भारत में खुदरा बिक्री दोगुना बढ़कर 3,293 इकाई हो गई। कंपनी ने सोमवार को एक बयान में बताया कि वर्ष 2020 में उसने 1,639 इकाई बेचीं थी। ऑडी इंडिया के अनुसार बिजली से चलने वाली ई-ट्रॉन 50, ई-ट्रॉन 55, ई-ट्रॉन स्पोर्टबैक 55, ई-ट्रॉन जीटी, आरएस ई-ट्रॉन जीटी और ए-सेडान के साथ पेट्रोल से चलने वाली क्यू श्रेणी के वाहनों की बिक्री बढ़ने से यह वृद्धि हुई है। इसके अलावा एसयूवी क्यू2, क्यू5 और क्यू8 के साथ ए4 और ए6 मॉडल कंपनी के सबसे अधिक बिकने वाले वाहन बने रहे। वही ऑडी आरएस और एस की 2022 में भी मजबूत मांग जारी है। ऑडी इंडिया के अध्यक्ष बलबीर सिंह ढिल्लों ने कहा, 'कोरोना वायरस महामारी की दूसरी लहर और कलपुर्जों, जिंस की कीमतों, माल-ढुलाई में चुनौती जैसे अन्य वैश्विक बाधाओं के बावजूद हम 2021 में अपने प्रदर्शन से बहुत खुश हैं। उधर, बजाज ऑटो की कुल खुदरा बिक्री दिसंबर 2021 में तीन प्रतिशत घटकर 3,62,470 इकाई की रह गई। कंपनी ने सोमवार को जारी बयान में कहा कि उसने इससे पिछले वर्ष, इसी महीने में कुल 3,72,532 इकाई की बिक्री की थी। बजाज के अनुसार कंपनी की घरेलू बिक्री हालांकि दिसंबर 2021 में पांच प्रतिशत बढ़कर 1,45,979 इकाई पर पहुंच गई, जो दिसंबर 2020 में 1,39,606 इकाई थी। कंपनी के दोपहिया वाहनों की बिक्री समीक्षाहीन महीने में छह प्रतिशत घटकर 3,18,769 इकाई की रह गई। दिसंबर 2020 में यह 3,38,584 इकाई की थी। बयान के अनुसार दिसंबर 2020 में बेचे गए 33,948 वाहनों की तुलना में पिछले महीने के दौरान निर्यात समेत कुल वाणिज्यिक वाहनों की बिक्री 29 प्रतिशत बढ़कर 43,701 इकाई हो गई।

अश्विन ने दक्षिण अफ्रीकी गेंदबाज मार्को को जमकर सराहा

जोहानिसबर्ग । भारतीय क्रिकेट टीम के अनुभवी स्पिन आर अश्विन ने दक्षिण अफ्रीका के 21 साल के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मार्को जेन्सन की जमकर तारीफ की है। जेन्सन ने इस मैच की पहली पारी में शानदार गेंदबाजी कर भारतीय बल्लेबाजों को संभलने का अवसर नहीं दिया था। इस गेंदबाज ने 31 रन देकर 4 विकेट लिए थे। अश्विन ने जेन्सन कहा कि बाएं हाथ का गेंदबाज हमेशा आपके गेंदबाजी आक्रमण में विविधता लेकर आता है। जेन्सन का एक्शन भी विशेष है। जेन्सन ने पहले टेस्ट के मुकाबले जोहानिसबर्ग टेस्ट में काफी अच्छी गेंदबाजी की है। पहले टेस्ट के मुकाबले इस मैच में उनकी लाइन लेंथ काफी सटीक थी। मार्को ने सेंचुरियन टेस्ट में डेब्यू करते हुए पहली पारी में तो केवल एक विकेट लिया था पर दूसरी पारी में उन्होंने अच्छी गेंदबाजी करते हुए 55 रन देकर 4 विकेट लिए थे। जेन्सन ने जोहानिसबर्ग में भी उसी प्रकार का प्रदर्शन किया। इससे पहले साल 2018 में जब भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका दौरे पर गई थी। तब जेन्सन ने बतौर नेट बॉलर भारतीय टीम को अभ्यास कराया था। उस समय भी उन्होंने अपनी स्विंग और रफ्तार से कप्तान विराट कोहली को काफी परेशान किया था।

भारतीय टीम का इस साल का कार्यक्रम भी है बेहद व्यस्त

मुम्बई (एजेंसी)।

भारतीय क्रिकेट टीम अभी दक्षिण अफ्रीका के दौरे पर है। भारतीय टीम का इस साल का कार्यक्रम भी बेहद व्यस्त है और उसके इंग्लैंड दौरे पर भी जाना है। वहीं ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका और बांग्लादेश के खिलाफ उसे घरेलू सीरीज खेलनी है। इसके अलावा श्रीलंका में होने वाले एशिया कप में भी भारतीय टीम शामिल होगी। भारतीय टीम को इस साल काफी एकदिवसीय और टी20 मैच खेलने हैं। इससे टीम की टी20 विश्वकप और एकदिवसीय विश्वकप के लिए अच्छी तैयारी हो जाएगी। भारतीय टीम का साल 2022 का कार्यक्रम इस प्रकार है।

जनवरी

- 3 जनवरी से 7 जनवरी : दूसरा टेस्ट, जोहान्सबर्ग
- 11 जनवरी से 15 जनवरी : तीसरा टेस्ट, केप टाउन
- 19 जनवरी : पहला वनडे, पार्ल
- 21 जनवरी : दूसरा वनडे, पार्ल
- 23 जनवरी : तीसरा वनडे, केप टाउन

फरवरी

वेस्टइंडीज का भारत दौरा

- 6 फरवरी : पहला वनडे, अहमदाबाद
- 9 फरवरी : दूसरा वनडे, जयपुर
- 12 फरवरी : तीसरा वनडे, कोलकाता
- 15 फरवरी : पहला टी20, कटक
- 18 फरवरी : दूसरा टी20, विशाखापत्तनम
- 20 फरवरी: तीसरा टी20, त्रिवेंद्रम

फ़रवरी मार्च

श्रीलंका का भारत दौरा

- 25 फरवरी : पहला टेस्ट, बेंगलुरु
- 5 मार्च : दूसरा टेस्ट, मोहाली
- 13 मार्च : पहला टी20, मोहाली
- 15 मार्च : दूसरा टी20, धर्मशाला
- 18 मार्च : तीसरा टी20, लखनऊ

मार्च-मईः आईपीएल

जून

दक्षिण अफ्रीका का भारत दौरा

- 9 जून : पहला टी20, चेन्नई
- 12 जून : दूसरा टी20, बेंगलुरु
- 14 जून : तीसरा टी20, नागपुर
- 17 जून : चौथा टी20, राजकोट
- 19 जून : पांचवां टी20, दिल्ली

जुलाई

भारत का इंग्लैंड दौरा

- 1 जुलाईः पुनर्निर्धारित पांचवां टेस्ट, बर्मिंघम
- 7 जुलाई : पहला टी20, साउथेम्प्टन
- 9 जुलाई : दूसरा टी20, बर्मिंघम
- 10 जुलाई : तीसरा टी20, नॉटिंघम
- 12 जुलाई : पहला वनडे, लंदन
- 14 जुलाई : दूसरा वनडे, लंदन
- 17 जुलाई : तीसरा वनडे, मैनचेस्टर

सितंबरः श्रीलंका में टी20 एशिया कप

- **सितंबर से अक्तूबर :** ऑस्ट्रेलिया का भारत दौरा , चार टेस्ट, तीन टी20 मैच खेले जाएंगे
- **16 अक्टूबर से 13 नवंबर :ऑस्ट्रेलिया में टी20 विश्व कप**
- नवंबर बांग्लादेश का भारत दौरा , दो टेस्ट, तीन वनडे मैच की सीरीज
- दिसंबर श्रीलंका का भारत दौरा , पांच वनडे मैच की सीरीज।

कोरोना संक्रमण से ऑस्ट्रेलियाई घरेलू क्रिकेट लीग के मैच स्थगित

मेलबर्न (एजेंसी)।

कोरोना संक्रमण के कारण आस्ट्रेलियाई घरेलू क्रिकेट लीग में बाधा आई है। लीग में जैव सुरक्षित वातावरण (बायो बबल) के बाद भी संक्रमण के मामले देखते हुए कई मैचों के कार्यक्रम बदले गये हैं। महिला और पुरुष दोनों के घरेलू क्रिकेट मैच इससे प्रभावित हुए हैं। कोविड-19 के मामले बढ़ने के कारण सीमाएं बंद कर दिये जाने के बाद महिला राष्ट्रीय क्रिकेट लीग के उन दो मैच को अगले दो माह तक के लिए स्थगित कर दिया गया है जिनमें पश्चिमी आस्ट्रेलिया की टीम भी शामिल थी। इस कारण अब महिलाओं की 50 ओवर की घरेलू प्रतियोगिता का फाइनल भी मार्च में ही हो पाएगा। इसके अलावा बिग बैश लीग (बीबीएल) पर भी संकट छा गया है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) समझ नहीं पा रहा है कि किस प्रकार खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ को सुरक्षित रखते हुए लीग को पूरा किया जाये। कोविड के कई मामले सामने आने के कारण बीबीएल टीम के खिलाड़ी भी परेशान हैं। ऐसे में इस लीग को जारी रखा जाएगा या नहीं इसका फैसला भी जल्द हो सकता है। वहीं यात्रा सीमित करने के लिये सभी आठ टीम को मेलबर्न में ही रखा जा सकता है। मेलबर्न स्टार्स के 12 खिलाड़ियों को कोविड-19 से संक्रमित पाया गया है जिसके कारण उसे अपने पिछले दो मैचों में टीम उतारने के लिये विक्टोरिया क्लब से क्रिकेटरों को बुलाना पड़ा था। मेलबर्न स्टार्स के खिलाड़ी मार्कस स्टोइनिस, एडम जंपा और नाथन कूल्टर नाइल कोविड-19 के कारण अभी पृथकवास में हैं। इसके अलावा सिडनी थंडर्स, पर्थ स्कोरचर्स और ब्रिस्बेन हीट्स के खिलाड़ी भी संक्रमित पाये गये हैं।

कैब अध्यक्ष अविषेक डालमिया पाए गए कोरोना पॉजिटिव, स्थानिय अस्पताल में कराया भर्ती

कोलकाता। बंगाल क्रिकेट संघ (कैब) के अध्यक्ष अविषेक डालमिया को कोविड-19 के लिए पॉजिटिव पाए जाने के बाद मंगलवार को शहर के अस्पताल में भर्ती कराया गया। डालमिया ने फेसबुक पोस्ट में कहा कि उनमें बुखार जैसे कोविड-19 के लक्षण नजर आ रहे थे और उनकी आरटी-पीसीआर रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। एक अधिकारी ने बताया, 'एहतियाती कदम के तौर पर उन्हें वुडलैंड्स अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उन्हें मोनोकलोनल एंटीबॉडी कॉकटेल थेरेपी दी जाएगी और अभी उनकी स्थिति स्थिर है।' पिछले हफ्ते भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के अध्यक्ष सौरव गांगुली को भी पॉजिटिव पाए जाने के बाद इसी अस्पताल में भर्ती कराया गया था और उनका चार दिन तक उपचार चला था। बंगाल के पूर्व कप्तान लक्ष्मी रतन शुक्ला भी कोविड पॉजिटिव पाए गए हैं। वह राज्य की अंडर-23 टीम के कोच हैं। अधिकारी ने कहा, 'उसे तेज बुखार है और उनकी परीक्षण रिपोर्ट पॉजिटिव आई है और उसे घर में पृथकवास पर रहने की सलाह दी गई है। सोमवार को स्वास्थ्य विभाग के बुलेटिन के अनुसार पश्चिम बंगाल में कोविड के 6,078 नए मामले आए जिससे कुल पॉजिटिव मामलों की संख्या 16,55,228 हो गई है। पिछले 24 घंटे में 13 लोगों की मौत के बाद इस वायरस से मरने वालों की कुल संख्या 19,794 हो गई है। कुल सक्रिय मामले 20,186 हैं।

सानिया-किचनोक तथा रामकुमार-बोपन्ना एडीलेड में आगे बढ़े

एडीलेड (एजेंसी) ।

भारतीय टेनिस खिलाड़ियों के लिए मंगलवार का दिन अच्छा रहा तथा सानिया मिर्जा के अलावा रामकुमार रामनाथन और रोहन बोपन्ना की जोड़ी भी यहां एटीपी और डब्ल्यूटीए टूर्नामेंट में पहले दौर के मैच जीतने में सफल रहे। सानिया और यूक्रेन की उनकी जोड़ीदार नादिया किचनोक ने डब्ल्यूटीए 500 प्रतियोगिता के पहले दौर में पहला सेट गंवाने के बाद शानदार वापसी करके गैब्रिएला डाब्रोवस्की और गियुलिआना ओल्मोस की दूसरी वरीयता प्राप्त जोड़ी को 1-6, 6-3, 10-8 से हराया। एटीपी 250 प्रतियोगिता में रामकुमार और अनुभवी बोपन्ना की जोड़ी ने आसान जीत दर्ज की। एटीपी टूर में पहली बार ये दोनों जोड़ी बनाकर खेल रहे हैं। बोपन्ना और रामकुमार ने पहले दौर में अमेरिका के जेमी सेरेटानी और ब्राजील के फर्नांडो रोम्बोली को 6-2, 6-1 से पराजित किया। प्री क्वार्टर फाइनल में उनका मुकाबला अमेरिका के नाथनील लैमन्स और जैकसन विथ्रो से होगा। रामकुमार ने बाद में कहा कि हमारा मैच अच्छा था। हम दोनों ने अच्छी सर्विस की और अच्छे रिटर्न किए। हमने अच्छा तालमेल बिठाया और रणनीति पर कायम रहे। मुझे बोपन्ना के साथ खेलकर हमेशा खुशी होती है जो कि बेहद अनुभवी खिलाड़ी है। रामकुमार को एकल क्वालीफायर्स में डेनमार्क के होल्गर रून से 4-6 6-7(7) से हार का सामना करना पड़ा था। एडीलेड में खेली जा रही प्रतियोगिताओं से खिलाड़ी आस्ट्रेलियाई ओपन की तैयारियां कर रहे हैं। वर्ष का पहला ग्रैंडस्लैम 17 जनवरी से मेलबर्न में शुरू होगा।

संक्षिप्त समाचार

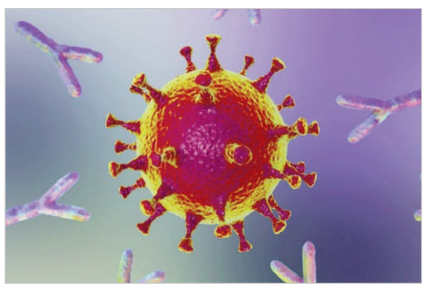

कोरोना संक्रमण बढ़ने से बार्सिलोना और बायर्न पर संकट के बादल

बार्सिलोना।

दुनियाभर में बढ़ते कोरोना संक्रमण के चलते खेलों पर फिर संकट के बादल छा गए हैं। बार्सिलोना के कोविड-19 से संक्रमित खिलाड़ियों की सूची में पेड्री गोंजालेज और फेरान टोरेस का नाम भी जुड़ गया है जबकि जर्मन क्लब बायर्न म्यूनिख की संक्रमण के कारण बुंदेसलीगा की तैयारियों को झटका लगा है। टोरेस मैनचेस्टर सिटी से स्थानान्तरण पर बार्सिलोना से जुड़े हैं। कैंप नोउ में हजारों प्रशंसकों के सामने उन्हें आधिकारिक तौर पर बार्सिलोना की जर्सी सौंपी गई थी लेकिन इसके कुछ घंटों बाद पता चला कि कोविड-19 के लिए उनका परीक्षण पॉजिटिव आया है। बार्सिलोना ने कहा कि टोरेस और पेड्री दोनों का स्वास्थ्य अच्छा है और वे अपने घरों में पृथकवास पर हैं। बार्सिलोना को संक्रमण के कारण अब भी गावी पेज, ओस्मान डेम्बेले, सर्गिनो डेस्ट, फिलिप कॉटिन्हो और अब्दे एज़लज़ौली की सेवाएं नहीं मिल रही हैं। जोर्डी अल्बा और दानी एल्वेस ने परीक्षण नेगेटिव आने के बाद सोमवार को अभ्यास शुरू कर दिया है। इस बीच बुंदेसलीगा के 18 क्लबों में से 13 क्लब में संक्रमण के मामले पाये गये हैं। जो टीम सबसे अधिक प्रभावित हैं उनमें मौजूदा चैंपियन बायर्न म्यूनिख भी है। उसके कई खिलाड़ियों और सहयोगी स्टाफ के सदस्यों का वापसी पर परीक्षण पॉजिटिव आया है जिससे उसे अपना अभ्यास टालना पड़ा। बायर्न के जिन सदस्यों का परीक्षण पॉजिटिव आया है उनमें कप्तान और गोलकीपर मैनुअल नेउर, किंग्सले कोमन, कोरेंटिन टॉलिसो और उमर रिचड्र्स तथा सहायक कोच डिनो टॉपमोलर शामिल हैं।

मिशेल के यौन शोषण आरोपों की जांच कर रही ऑस्ट्रेलियाई पुलिस

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर जेमी मिशेल ने एक अहम खुलासा किया है। मिशेल ने कहा है कि साल 1985 में जब वह अंडर-19 टीम की ओर श्रीलंका और भारत के दौरे पर गये थे तब उनका यौन शोषण हुआ था। मिशेल ने एक साक्षात्कार में आरोप लगाया है कि टीम के एक चिकित्सक ने दर्द के इलाज के दौरान उनका शोषण किया था। इस मामले की जांच ऑस्ट्रेलियाई पुलिस कर रही है। वहीं क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने कहा कि पुलिस जांच में सहयोग किया जा रहा है। मिशेल ने टीम की एक तस्वीर ऑनलाइन देखने के बाद पिछले साल अगस्त में सीए से इस मामले में जवाब मांगा था। साथ ही कहा कि उन्होंने इस मामले की सूचना सरकार के भ्रष्टाचार और दुर्व्यवहार मामले की जांच करने वाले विभाग को भी दी थी। इसपर मिशेल ने कहा, 'मुझे कुछ राहत मिली है कि आखिरकार 1985 के उस दौरे की जांच हो रही है। वह दौरा मेरे क्रिकेट जीवन का मुख्य आकर्षण होने की जगह मेरे लिए तनावकारी साबित हुआ था।' वहीं सीए के मुख्य कार्यकारी निक हॉकले ने कहा कि उनका संगठन अपने खिलाड़ियों और कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। हॉकले ने कहा, 'हम संगठन में एक समावेशी, सुरक्षित और दूसरों की मदद वाली संस्कृति सुनिश्चित करने को लेकर प्रतिबद्ध है।

लुईस हैमिल्टन ने बेची एक्सीडैंट हुई दुर्लभ पगानी जोंडा सुपरकार, कमाए 7 मिलियन पाऊंड

(एजेंसी) ।

लुईस हैमिल्टन ने अपनी दुर्लभ पगानी जोंडा सुपरकार को 8.5 मिलियन में बनवाई थी जिसे उन्होंने सात साल बाद बेचकर बड़ी रकम कमाई है। इतालवी पत्रिका क्वाट्रोरूओट के अनुसार- ब्रिटिश आइकन ड्राइवर अब पगानी जोंडा 760 एलएच के मालिक नहीं रहे। यह वही कार है जिसे 2015 में हैमिल्टन ने ब्राजीलियन ग्रैंड प्रिक्स से ठीक पहले मोनाका में एक्सीडैंट मारा था। हैमिल्टन ने कहा था कि उस दिन नींद की कमी के कारण वह कार पर नियंत्रण खो बैठे थे।हैमिल्टन ने नैतिक कारणों से इस वाहन को बेचने का फैसला किया क्योंकि मर्सिडीज भविष्य में इलेक्ट्रिक कार चलाने के लिए उत्सुक है। इसलिए अब हैमिल्टन नई इलेक्ट्रिक कार लेने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। बता दें कि हैमिल्टन द्वारा बेची गई जोंडा 760 एलएच 217 कार 0-60 की स्पीड मात्र तीन सेकंड में पकड़ लेती है। हैमिल्टन ने बीते दिनों यह भी कहा था कि कार के प्रति अपने प्यार के बावजूद वह शुरू में इसे चलाने से नफरत करते थे। उन्होंने कहा- जोंडा ड्राइव करने के लिए भयानक है!

यह मेरे पास सबसे अच्छी आवाज वाली कार है, लेकिन इसे संभालने के लिहाज से यह सबसे खराब है।

रैना ने उत्तर प्रदेश सरकार से पूछा , कब तक गाजियाबाद में बनेगा स्टेडियम ?

नई दिल्ली ।

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व क्रिकेटर सुरेश रैना ने उत्तर प्रदेश सरकार से कहा है कि गाजियाबाद में अब तक स्टेडियम नहीं बना है जबकि सरकार ने इसे बनाने का वादा किया था। रैना ने ट्विटर पर लिखा है कि साल 2015 में स्टेडियम बनने की बात कही गयी थी पर अभी तक केवल जमीन ही नजर आ रही है। इसपर उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से कहा गया है कि है स्टेडियम बनाने का वादा पूरा किया जाएगा। इससे पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के मीडिया सलाहकार शलभमणि त्रिपाठी ने देवरिया में युवा क्रिकेटरों से मुलाकात के दौरान प्रस्तावित स्टेडियम को लेकर बात की थी। इसी ट्वीट के जवाब में रैना ने ट्वीट कर पूछा था कि स्टेडियम कब बनेगा? रैना के इस ट्वीट पर त्रिपाठी ने जवाब दिया कि आपने कहा है तो पुरजोर प्रयास होगा, आप यूपी के गौरव हैं। जिसके बाद रैना ने कहा कि साल 2015 में गाजियाबाद ने अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम का सपना देखा था पर अभी भी सिर्फ जमीन ही जमीन दिखाई देती है, कृपया राज्य सरकार इसपर ध्यान दे। गाजियाबाद के राजनगर एक्सटेंशन में अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बनाने की बात लंबे समय से चल रही है। यहां पर इसका भूमि पूजन भी हो चुका है पर अभी तक स्टेडियम का काम ज़मीन पर नजर नहीं आ रहा है।

एमबापे की हैट्रिक से पीएसजी फ्रेंच कप फुटबॉल के अंतिम 16 में पहुंची

पेरिस (एजेंसी)।

काइलन एमबापे की शानदार हैट्रिक से पेरिस सेंट जर्मेन (पीएसजी) फ्रेंच कप फुटबॉल के अंतिम 16 में पहुंच गयी है। एमबापे के दूसरे हाफ में लगायी हैट्रिक से पीएसजी ने वानेस को 4-0 से हरा दिया। इस मैच में वानेस के गोलकीपर क्लेमेंट पेट्रेल ने दो अच्छे बचाव किए पर इसके बाद पीएसजी के सेंट्रल डिफेंडर प्रेसनल किमपेम्बे ने 28वें मिनट में नुनो मेंडेस के कार्नर पर हेडर से एक गोल दाग दिया। वानेस की रक्षापंक्ति ने अपने शानदार प्रदर्शन से पहले हॉफ में एमबापे को गोल करने का कोई मौका नहीं दिया पर दूसरे हॉफ में एमबापे के सामने वह टिक नहीं पायी। एमबापे ने 59वें मिनट में गोल दागकर स्कोर 2-0 किया और फिर 71वें और 76वें मिनट में दो और गोल करने के साथ ही अपनी हैट्रिक पूरी करते हुए अपनी टीम को 4-0 की अच्छी बढ़त दिला दी।

एशिया कप में अच्छा प्रदर्शन 2022 में सफलता के लिए महत्वपूर्ण : सविता

बेंगलुरू (एजेंसी) ।

भारतीय महिला हॉकी टीम की उप-कप्तान सविता ने कहा कि टीम का मुख्य ध्यान महिला एशिया कप में खिताब का बचाव करके एफआईएच विश्व कप में सीधे जगह बनाकर आगे के व्यस्त सत्र के लिए लय हासिल करने पर होगा। भारतीय महिला टीम नए साल की शुरुआत जनवरी में ओमान की यात्रा के साथ करेगी जहां वे 21 से 28 जनवरी तक होने वाले एशिया कप में अपने खिताब का बचाव करने के लिए उतरेगी। महाद्वीप की शीर्ष आठ टीम भारत, चीन, कोरिया, जापान, मलेशिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया और सिंगापुर एशिया कप में चुनौती पेश करेंगी। इस टूर्नामेंट में पहले चार स्थानों पर रहने वाली टीम जुलाई में स्पेन और नीदरलैंड में होने वाले एफआईएच महिला विश्व कप 2022 के लिए क्वालीफाई करेंगी। सविता ने कहा, 'हमने 2017 में एशिया कप जीतकर महिला विश्व कप के लिये सीधे क्वालीफाई किया था जो लंदन में खेला गया था। इस जीत ने पिछले चार वर्षों में हमारे प्रदर्शन में निरंतर सुधार की नींव रखी थी।' गोलकीपर सविता ने हॉकी इंडिया के बयान में कहा, 'एशिया कप में अच्छे प्रदर्शन से निश्चित तौर पर हमें जरूरी लय हासिल होगी क्योंकि हमें लगातार दो टूर्नामेंट खेलने हैं।' एशिया कप के बाद भारतीय महिला टीम पहली बार एफआईएच प्रो लीग में खेलेगी। वह भुवनेश्वर में नीदरलैंड, स्पेन, जर्मनी और इंग्लैंड का सामना करेगी।

इसके बाद भारतीय टीम जून में बेल्जियम, अर्जेंटीना और अमेरिका के खिलाफ खेलने के लिए बेल्जियम और नीदरलैंड का दौरा करेगी। सविता ने कहा, 'मुझे लगता है कि प्रो लीग मैच विश्व कप (जुलाई में) से पहले हमें सर्वश्रेष्ठ लय हासिल करने का मौका प्रदान करेंगे। पिछली बार विश्व कप में हमने कई दशकों में पहली बार क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई थी।' उन्होंने कहा, 'ओलंपिक में हमारे प्रदर्शन के बाद हमें जो समर्थन मिला है उसे देखते हुए महिला हॉकी में रुचि बनाए रखने के लिये इन प्रमुख प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन करके उम्मीदों पर खरा उतरना जरूरी है।'

जिम्बाब्वे अंडर-19 क्रिकेट के चार खिलाड़ी कोरोना संक्रमित, वेस्टइंडीज में आइसोलेट

हरारे। अंडर-19 विश्व कप से पहले जिम्बाब्वे टीम के चार खिलाड़ी कोरोना संक्रमित पाए गए हैं। वह फिलहाल वेस्टइंडीज़ में आइसोलेट कर रहे हैं। आरटी-पीसीआर टेस्ट होने के बाद जिम्बाब्वे क्रिकेट ने पॉजिटिव मामलों की पुष्टि की।उन्होंने बताया कि वह चारों खिलाड़ी ठीक हैं। उनकी दोबारा से जांच की जाएगी और निगेटिव रिपोर्ट आने पर ही वह सेंट किट्स में बाकी दल के साथ जुड़ पाएंगे। जिम्बाब्वे को नौ और 11 जनवरी को कनाडा और बंगलादेश के खिलाफ अभ्यास मैच खेलने है। जिम्बाब्वे अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पापुआ न्यू गिनी के साथ ग्रुप सी में है। विश्व कप से पहले जिम्बाब्वे की अंडर-19 टीम ने आयरलैंड के खिलाफ चार मैचों की सीरीज़ खेली। उन्होंने पहले तीन मैच में जीत हासिल की, जबकि चौथे मैच में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। विश्व कप में हर ग्रुप से शीर्ष दो टीमें सुपर लीग में प्रवेश करेगी। निचली दो टीमें प्लेट लीग के मुक़ाबले खेलेगी। पिछले संस्करण में भारत को हराकर बंगलादेश अंडर-19 विश्व विजेता बना था।

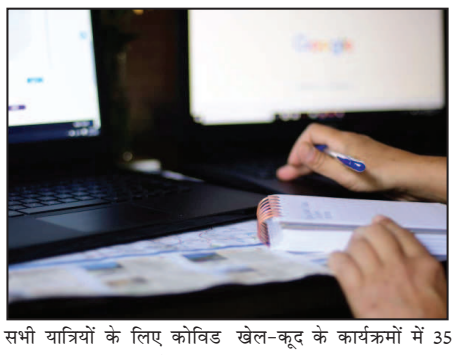

आईएमए की ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने के साथ ही भीड़भाड़ के कार्यक्रमों पर रोक लगाने की सिफारिश

अहमदाबाद। गुजरात में लगातार बढ़ते कोरोना के मामलों को देखते हुए इंडियन मेडिकल एसोसिएशन की स्थानीय इकाई ने राज्य सरकार को पुनः ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने के साथ ही राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रमों पर पाबंदियां लगाने की सिफारिश की है। आईएमए ने लोगों से भी अपील की है कि वे कोविड नियमों का पालन करें, ताकि कोरोना से खुद को सुरक्षित रख सकें। किशोरों के लिए शुरू किए गए टीकाकरण को लेकर आईएमए का कहना है कि जो विद्यार्थी स्कूल नहीं जा रहे हैं उन्हें भी वैक्सीनेट किया जाए। साथ ही मौजूदा स्थिति को देखते हुए फिर एक बार ऑनलाइन शिक्षा शुरू की जानी चाहिए। इसके अलावा विदेश से आनेवाले सभी यात्रियों के लिए कोविड टेस्ट के बाद प्रवेश और उनके लिए कोरंटिन पॉलिसी बनाई जाए। इतना ही नहीं राज्य में राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों पर तुरंत लगाम लगाई जाए। किसी भी स्थान पर उसकी क्षमता के 25 प्रतिशत लोगों को ही प्रवेश दिया जाए। इसके अलावा होटल, रेस्टोरंट, जिम, सिनेमा की क्षमता के 50 प्रतिशत और खेल-कूद के कार्यक्रमों में 35 प्रतिशत से अधिक लोगों के एकत्र होने पर रोक लगाई जाए। सरकारी दफ्तरों और सार्वजनिक स्थलों पर उन्हीं लोगों को प्रवेश दिया जाए, जिन्होंने वैक्सीन के दोनों डोज लिए हों। साथ ही रात्रि कर्फ्यू का कड़ाई से अमल कराने और कोविड गाइडलाइन का सख्ती से पालन कराने की आईएमए ने राज्य सरकार से सिफारिश की है।

विद्यार्थी नेता युवराजसिंह जाडेजा का ऊर्जा विभाग की भर्ती भ्रष्टाचार का आरोप

अहमदाबाद। राज्य में हेड क्लर्क की परीक्षा के पर्चे लीक होने का खुलासा करने वाले विद्यार्थी नेता युवराजसिंह जाडेजा ने आज फिर एक बार सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। युवराजसिंह का आरोप है कि राज्य के ऊर्जा विभाग की भर्ती प्रक्रिया में पिछले तीन साल से धांधली चल रही है और उम्मीदवारों से रुपए लेकर सरकारी विभागों में नियुक्ति दी जाती है। पीजीवीसीएल, डीजीवीसीएल और यूजीवीसीएल की परीक्षा में धांधली का आरोप लगाते हुए जाडेजा ने कहा कि इसका एपी सेंटर साबरकांठा, अरवल्ली और मेहसाणा है। यूजीवीसीएल जूनियर असिस्टन्ट की परीक्षा में एक ही सिकवेंस और नंबर वाले उम्मीदवारों को समान मार्क्स मिले हैं। इस धांधली का लाभ पाने वालों में धवल पटेल, कुशांग पटेल, हितेश पटेल, रजनीश पटेल, प्रियंक पटेल, आंचल पटेल, प्रदीप पटेल, बाबु पटेल, जिगीशा पटेल, ध्रुव पटेल शामिल हैं। युवराजसिंह के मुताबिक एक ही गांव के 18 युवाओं ने रुपए देकर नौकरी हासिल की है। जेटको की परीक्षा में मितुल पटेल ने इसका लाभ उठाया है। उन्होंने सीधे आरोप लगाया कि रुपए लेकर युवाओं की भर्ती की जा रही है और यह सिलसिला पिछले तीन साल से ऊर्जा विभाग में चल रहा है। शुरुआत में टोकन और नौकरी मिलने के बाद पूरी रकम दी जाती होने का आरोप युवराजसिंह ने लगाया है। उन्होंने धांधली करने वाले और इसका लाभ लेनेवालों के खिलाफ पुख्ता सबूत होने का विद्यार्थी नेता युवराजसिंह जाडेजा ने दावा किया है। उन्होंने एसआईटी का गठन कर सभी स्पर्धात्मक परीक्षाओं की जांच की जाए। उन्होंने कहा कि पीजीवीसीएल, डीजीवीसीएल और यूजीवीसीएल में भर्ती की परीक्षा ऑनलाइन ली जाती है, जिसमें कंप्यूटर हेक कर कंट्रोल रूम से उत्तर दिए जाते हैं, जिसके मेरे पास सबूत के रूप में ऑडियो और वीडियो हैं। जाडेजा ने मुख्यमंत्री और गृह राज्यमंत्री से पूरे मामले में कार्यवाही करने की अपील करते हुए कहा कि कुछ लोग विद्यार्थियों की मेहनत पर पानी फेर रहे हैं। हम गुजरात के विद्यार्थियों के हित में मुद्दे उठाते हैं और भविष्य में भी उठाते रहेंगे। मैं इस मुद्दे को कोई राजनीतिक रंग नहीं देना चाहता और कोई पार्टी भी इसे लेकर राजनीतिक रोटियां सेंकने का प्रयास न करे। ऊर्जा विभाग में धनसुरा के अवधेश पटेल का नाम सामने आने से हडकंप मच गया है। अवधेश पटेल भाजपा युवा मोर्चा के महासचिव हैं।

अहमदाबाद मंडल भारतीय रेलवे पर समग्र प्रदर्शन से भारतीय रेल के शीर्ष 5 मंडलों में पहुँचा

अहमदाबाद। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल ने चालू वित्तीय वर्ष 2021-22 में समग्र प्रदर्शन के आधार पर भारतीय रेलवे के सभी मंडलों में 5 वा स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया है। समग्र प्रदर्शन (over-all performance) के आधार पर यह उपलब्धि हासिल हुई है। मंडल रेल प्रबंधक श्री तरुण जैन ने जानकारी देते हुए बताया कि गत वर्ष 2020-21 में अहमदाबाद मंडल को KPI रैंकिंग में 18 स्थान प्राप्त हुआ था। पिछले कुछ माह में मंडल ने लगातार शानदार प्रदर्शन करते हुए भारतीय रेलवे से भारतीय रेल के शीर्ष 5 मंडलों में पहुँचा। हाल के दिनों में मंडल ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है जिससे भारतीय रेलवे के सभी मंडलों में शीर्ष 5 में रैंकिंग में सुधार करने में मदद मिली है। प्रदर्शन का मूल्यांकन विभिन्न प्रदर्शन संकेतको (KPI) के आधार पर किया जाता है। जैसे- सुरक्षा प्रदर्शन, राजस्व प्राप्ति, ट्रेनों की समय पालना, संपत्ति की विश्वसनीयता और बुनियादी ढांचे में सुधार इत्यादि मानकों के आधार पर मंडलों की रैंकिंग तय की जाती है।

अहमदाबाद मण्डल के महत्वपूर्ण मापदंडों में सुधार के संबंध में संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार है –

- नवंबर-2021 के महीने तक मण्डल की राजस्व प्राप्ति रु 3963 करोड़ है जो पिछले वर्ष की तुलना में 19त्न अधिक है। पिछले वर्ष के स्क्रैप निपटान प्रदर्शन की तुलना में आय में 22त्न का सुधार हुआ है। इसी तरह माल लदान में भी 11 फीसदी का उछाल आयाहै।
- मण्डल सुरक्षा में भी बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है, जिसके कारण पिछले वर्ष की तुलना में दुर्घटनाओं में 67 प्रतिशत की कमी आई है।
- संरक्षा में सुधार के लिए मण्डल ने चालू वर्ष में 18 मानवयुक्त एलसी गेटों को हटा दिया है और एक एलसी गेट को इंटरलॉक किया है।
- मण्डल पर ट्रैक सुधार कार्यों के संबंध में, चालू वर्ष के लिए ट्रैक नवीनीकरण कार्य में 21त्न, प्लैन ट्रैक की डीप स्क्रीनिंग में 62त्न और टर्न आउट की डीप स्क्रीनिंग में 363% का सुधार हुआ है।
- चालू वर्ष में मंडल 31.97 किलोमीटर दोहरीकरण का काम शुरू करने जा रहा है। अन्य क्षमता वृद्धि कार्यों जैसे आमान परिवर्तन, नई लाइन, रेलवे विद्युतीकरण की प्रगति भी अच्छी गति से चल रही है।
- चालू वर्ष में मंडल ने दीन दयाल पोर्ट ट्रस्ट बर्थ नंबर 13 से 16 तक रेल कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए एक निजी पोर्ट साइडिंग चालू किया है। इससे लोडिंग में सुधार करने में मदद मिलेगी।
- ट्रेनों की गति में सुधार करने के लिए, मंडल ने चालू वर्ष में 4 स्थायी गति प्रतिबंध (PSR) को हटाने में सफलता प्राप्त की है।
- मंडल पर मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों का समयपालन 97.6% बनाए रखा है जो पिछले वर्ष से 3त्न अधिक है।
- एसेट फेलियर में कमी तथा उनके रखरखाव मे भी सुधार हुआ है।
- गतिशीलता (mobility)-प्रधानमंत्री विजनञ्ज रेलवे देश की जीवन रेखाञ्ज माल लदान के क्षेत्र में अहमदाबाद मण्डल ने उत्कृष्ट योगदान किया।
- माल-लदान के क्षेत्र में अहमदाबाद मण्डल ने स्थानीय इंडस्ट्रीज व पोर्ट ट्रैफिक को बडावा देने के लिए विगत 5 माह में उल्लेखनीय कार्य किया है।

शादी की लालच देकर युवती को प्रेमजाल में फांसने के बाद गर्भवती होने पर छोड़ दिया

सूरत। शहर के पांडेसरा क्षेत्र में रहने वाली एक युवती को बहला फुसलाकर प्रेमजाल में फांसने के बाद युवक ने उसके साथ कई दफा दुष्कर्म किया। युवती के गर्भवती होने पर युवक ने दवाई खिलाकर उसका गर्भपात करवाया और बाद में उसके साथ शादी करने से भी इंकार कर दिया। सूरत के पांडेसरा क्षेत्र में रहनेवाली 26 वर्षीय युवती इंटीरियल डिजाइनर है, जिसका करीब डेढ़ साल पहले 29 वर्षीय हेमचंद्र रतनलाल दायमा नामक युवक से संपर्क हुआ था। सूरत के उधना क्षेत्र के रामनगर में रहनेवाला युवक एसबीआई बैंक के क्रेडिट कार्ड में काम करता है। क्रेडिट कार्ड बहाने हेमचंद्र ने युवती से संपर्क किया और उसके बाद मोबाइल और चैट करने लगे। विवाहित और एक बेटी का पिता होने के बावजूद हेमचंद्र ने युवती को बताया कि वह कुंवारा है। चिकनी चुपड़ी बातें कर हेमचंद्र ने युवती को अपने प्रेमजाल में फांस लिया। बाद में शादी की धमकी देकर हेमचंद्र युवती को डुमस स्थित एक होटल में ले गया और उसके साथ जबरन शारीरिक संबंध बनाए। जिससे युवती गर्भवती हो गई और इस बारे में जब उसने हेमचंद्र को बताया तो मेडिकल स्टोर से गर्भपात की दवाई ले आया और युवती को जबरन पिला दी। गर्भपात होने के बाद हेमचंद्र ने युवती से शादी करने से भी इंकार कर दिया। जिसके बाद युवती ने हेमचंद्र दायमा के खिलाफ पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवा दी। जिसके आधार पर पुलिस ने हेमचंद्र को गिरफ्तार कर आगे की कार्यवाही शुरू की है।

ऊर्जा विभाग की भर्ती में हुई धांधली के आरोपों की जांच की जाएगी : शिक्षा मंत्री

अहमदाबाद। ऊर्जा विभाग की भर्ती में धांधली के आरोपों के बाद राज्य के शिक्षा मंत्री जीतु वाघाणी सामने आए और सरकार का पक्ष रखा। वाघाणी ने कहा कि राज्य के युवाओं को भविष्य के लिए सरकार हमेशा पारदर्शी है और रहेगी। राज्य के ऊर्जा विभाग के अधीन जेटको द्वारा चल रही जूनियर इंजीनियर की परीक्षा को लेकर जो आरोप किए गए हैं, उन सभी आरोपों की संपूर्ण पारदर्शिता के साथ जांच की जाएगी और जो भी दोषी पाया जाएगा, उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि राज्य में हो रहे जूनियर इंजीनियर की इस परीक्षा के बारे में मीडिया के माध्यम से अनियमितता के जो आरोपों की जानकारी मिली, उसके बारे में मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने तत्काल जांच के आदेश दे दिए हैं और आगामी । जनवरी तक होनेवाली परीक्षा को संपूर्ण पारदर्शी माहौल में आयोजित करने के कड़े निर्देश दिए हैं। जीतु वाघाणी ने परीक्षा में हुई धांधली की जानकारी देनेवाले का स्वागत करते हुए कहा कि युवाओं के भविष्य से खिलवाड करने वाले किसी भी तत्त्व को राज्य सरकार बख्शेगी नहीं। भूतकाल में भी हमने चार्जशीट समेत आरोपियों के खिलाफ कड़े कदम उठाए हैं। भविष्य में ऐसी घटनाओं का पुनरावर्तन नहीं हो इसके लिए सरकार सतर्क है। यदि कहीं ऐसी घटनाएं सामने आए तो राज्य सरकार के संज्ञान में लाने की शिक्षा मंत्री ने अपील की। जीतु वाघाणी ने कहा कि जेटको द्वारा राज्य में जूनियर इंजीनियरींग की सिविल और इलेक्ट्रिकल संवर्ग के लिए 352 पदों के लिए आज से परीक्षा का 22 केन्द्रों पर प्रारंभ हुआ है। जिसमें करीब 35 हजार जितने विद्यार्थी परीक्षा देनेवाले हैं। पारदर्शी तरीके से परीक्षा हो इसके लिए सीसीटीवी और वीडियोग्राफी के द्वारा सर्वेलंस के साथ परीक्षा का आयोजन किया गया है। यह परीक्षा ऑनलाइन ली जा रही है, जिसमें मेरिट के आधार पर चयन किया जाएगा। ऊर्जा मंत्री के मार्गदर्शन में संपूर्ण परीक्षा पारदर्शी रूप से हो इसका ठोस आयोजन किया गया है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार का आरोप लगते हैं तो सरकार पूरे मामले की जांच करेगी। फिलहाल । जनवरी तक पारदर्शी रूप से परीक्षा संपन्न का कराने का आयोजन किया गया है।

गुजरात में कोरोना विस्फोट, एक ही दिन में 2265 नए मामले, दो मरीजों की मौत

अहमदाबाद। गुजरात में आज कोरोना का विस्फोट हुआ है। सोमवार को राज्य में कोरोना के 1259 मामले सामने आए थे, वहीं आज 2265 नए केस दर्ज होने के साथ राज्य में सक्रिय मरीजों की संख्या ।881 हो गई है। मंगलवार को राज्य में कोरोना से 2 मरीजों की मौत हो गई, जबकि 240 लोग ठीक होकर अपने घर लौट गए। आज राज्यभर में 8.।3 लाख से अधिक लोगों का टीकाकरण किया गया। स्वास्थ्य विभाग से मिली जानकारी के अनुसार पिछले 24 घंटों में अहमदाबाद कॉर्पोरेशन में सबसे अधिक 1290 कोरोना पॉजिटिव केस सामने आए हैं। वहीं सूरत कॉर्पोरेशन में 415, वडोदरा कॉर्पोरेशन में 86, आणंद में ।0, कच्छ में 3।, राजकोट कॉर्पोरेशन में 36, खेडा में 34, भरुच में 26, अहमदाबाद में 24, मोरबी में 24, गांधीनगर कॉर्पोरेशन में 23, राजकोट में 21, भावनगर कॉर्पोरेशन में 18, नवसारी में 18, जामनगर कॉर्पोरेशन में 16, मेहसाणा में 14, पंचमहल में 14, गांधीनगर में 12, सूरत में 9, वलसाड में 9, जूनागढ़ कॉर्पोरेशन में 8, वडोदरा में 8, जामनगर में 7, बनासकांठा में 6, साबरकांठा में 6, अरवल्ली में 5, भावनगर में 4, देवभूमि द्वारका में 4, जूनागढ़ में 4, महीसागर में 4, अमरेली में 3, गिर सोमनाथ में 3, तापी में 3, दाहोद में 2, डांग में 1 और सुरेन्द्रनगर में 1 समेत राज्यभर में कोरोना के कुल 2265 केस दर्ज हुए हैं। राज्य के बोटाद, छोटाउदेपुर, नर्मदा, पाटन और पोरबंदर में फिलहाल कोरोना का एक भी सक्रिय मरीज नहीं है। मंगलवार को राज्यभर में 240 लोगों को ठीक होने के बाद डिस्चार्ज किया गया। अहमदाबाद कॉर्पोरेशन में 61, राजकोट कॉर्पोरेशन में 37, वडोदरा कॉर्पोरेशन में 27, आणंद में 18, खेडा में 17, गिर सोमनाथ में 10, कच्छ में 8, राजकोट में 6, जूनागढ़ कॉर्पोरेशन में 6, भरुच में 4, वलसाड में 3, नवसारी में 2, जामनगर कॉर्पोरेशन में 2, गांधीनगर में 2, मेहसाणा में 1, सुरेन्द्रनगर में 1 और पोरबंदर में 1 व्यक्ति ठीक होकर अपने घर लौट गया। राज्य में 81928। लोग कोरोना को मात देकर स्वस्थ हो चुके हैं। मंगलवार को नवसारी और भावनगर में 1-1 मरीज की मौत के साथ कोरोना का मृतांक 10125 हो गया है। कोरोना के लगातार बढ़ते मामलों के चलते राज्य में सक्रिय मरीजों की संख्या 7881 पर पहुंच गई है। जिसमें 7863 स्टेबल हैं और 18 मरीज वेन्टीलेटर पर हैं। दूसरी ओर पिछले 24 घंटों में राज्यभर में 8।345। लोगों का टीकाकरण किया गया। जिसमें 24 हेल्थ केयर वर्कर और फ्रंट लाइन वर्कर को पहला और 249 को दूसरा डोज दिया गया। 45 वर्ष से अधिक आयु के 8014 को कोरोना का पहला और 36110 लोगों को दूसरा टीका लगाया गया। 18 से 45 वर्ष आयु समूह के 154685 को पहली और 96226 लोगों को कोविड की दूसरी वैक्सीन दी गई। वहीं 15 से 18 वर्ष के 578149 किशोरों को पहला डोज दिया गया। अब तक राज्य में 9 करोड़ 13 लाख 08 हजार 830 नागरिकों को वैक्सीनेट किया जा चुका है।

दमन में आर एल जी का क्लीन टू ग्रीनटीएम ‘ऑन व्हील्स’ अभियान

दमन : म्यूनिख-मुख्यालय स्थित रिवर्स लॉजिस्टिक्स ग्रुप (आर एल जी) की सहायक कंपनी - आरएलजी इंडिया, जो व्यापक रिवर्स लॉजिस्टिक्स समाधानों की अग्रणी वैश्विक सेवा प्रदाता कंपनी है, ने क्लीन टू ग्रीनटीएम ऑन व्हील्स अभियान, जो कि कंपनी के फ्लैगशिप कार्यक्रम क्लीन टू ग्रीनटीएम (सी2जी) का नवीनतम संस्करण है, को लॉन्च करने की घोषणा की। यह नवीनतम जागरूकता और संग्रह कार्यक्रम 110 शहरों और 300 कस्बों को कवर करेगा, और देश भर में चार मिलियन से अधिक नागरिकों तक पहुंचेगा। इस पहल के तहत, नौ संग्रह वाहन देश के शहरों और कस्बों में यात्रा करेंगे और स्कूली छात्रों, कॉर्पोरेट निकायों, थोक उपभोक्ताओं, खुदरा विक्रेताओं, रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन (आरडब्ल्यूए) के सदस्यों, अनौपचारिक क्षेत्र और स्वास्थ्य शिविरों में जागरूकता गतिविधियों का संचालन करते हुए अंतिम उपयोगकर्ताओं से 5500 मीट्रिक टन ई-कचरा एकत्र करेंगे।

अभियान नई दिल्ली और उत्तर में जम्मू, पूर्व में कोलकाता, गुवाहाटी और रांची, पश्चिम में अहमदाबाद, और देश के दक्षिणी भाग में बैंगलोर, चेन्नई और हैदराबाद में एक साथ शुरू होगा । कई ग्राउंड टीमों के साथ संग्रह वाहन एक निश्चित बीट-प्लान का पालन करेंगे; ग्राउंड टीमें सोशल मीडिया, क्लीन टू ग्रीन पोर्टल, रेडियो और क्लासिफाइड और मीडिया रिलीज का उपयोग करते हुए 1,145 से अधिक प्रचार और जागरूकता गतिविधियों का संचालन करते हुए अंतिम उपयोगकर्ताओं से ई-कचरे संग्रह की सुविधा प्रदान करेंगी।

जमीन पर, C2G ऑन व्हील्स का लक्ष्य 326 स्कूलों, 188 आरडब्ल्यूए, 134 कार्यालय समूहों / थोक उपभोक्ताओं, 176 खुदरा विक्रेताओं, 156 अनौपचारिक क्षेत्रों और लगभग 4 स्वास्थ्य देखभाल शिविरों को कवर करने का है।

वित्त वर्ष 2011-22 के लिए कंपनी की नवीनतम जागरूकता और संग्रह रणनीति के बारे में बात करते हुए, सुश्री राधिका कालिया, एमडी, आरएलजी इंडिया ने कहा, “यद्यपि महामारी का उद्योगों पर महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, हम आरएलजी में भारत के नागरिकों के बीच ई-कचरा जागरूकता फैलाने और देश में एक सुव्यवस्थित, औपचारिक ई-अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र की स्थापना करने के उद्देश्य की पूर्ति हेतु निरंतर प्रयास कर रहे हैं। क्लीन टू ग्रीनटीएम ऑन व्हील्स हितधारकों की पहुंच का विस्तार करके और दैनिक जीवन में ई-कचरे के उपयुक्त निपटान और रीसाइक्लिंग तकनीकों पर जोर और बढ़ावा देकर उद्देश्य पूर्ति हेतु निरंतर अग्रसर है । यह अभियान पूरे देश को अपने दायरे में लाने के लिए विकसित हुआ है।”

आरएलजी इंडिया से जुड़े प्रतिष्ठित निर्माताओं/ ब्रांड्स में माइक्रोसॉफ्ट, एलजी, एचपी, ओप्पो , लेनोवो , पायनियर , मोटोरोला , फुजित्सु , ब्रदर , सीमेंस , हायर , वीडियोजेट, वीरा , एसएमटी, बारटेक , वीडियोटेक्स, डाइवा , शिनको , इन्फिनिक्स , सिटी ट्रेडिंग , एआरयू, ट्रोवो , वि[illegible]ऑन , अलकेमी , टेक्नो, आईटेल एंड ओरइमो सम्मिलित हैं; अभियान ई-कचरे के सुरक्षित निपटान को बढ़ावा देने के लिए इन ब्रांड्स के साथ सक्रिय रूप से काम करेगा।

सूरत शहर के अडाजन स्थित सेंट मार्क हायर सेकेंडरी स्कूल में विभिन्न प्रकार के छात्रों के लाभ के लिए गतिविधियां संचालित की जा रही हैं और कोविड के विशेष दिशानिर्देशों का पालन किया जा रहा है.

सूरत शहर के अडाजन में सेंट मार्क हायर सेकेंडरी जो 25 साल से बच्चों को पढ़ा रहा है। क्षेत्र में केवल एक अंग्रेजी माध्यम का स्कूल है जहां केवल अंग्रेजी माध्यम पढ़ाया जाता है। कोविड की स्थिति के दौरान विद्यालय में नियमित सफाई, मास्क पहनना आदि कोविड के सभी नियमों का पालन किया जाता है। बच्चों को स्कूल में पढ़ाने के अलावा नृत्य, कराटे, स्केटिंग, एरोबिक्स, खेल आदि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को खेल सिखाया जाता है। सेंट मार्क हायर सेकेंडरी स्कूल के सभी शिक्षक दक्षिण इंडियाना से हैं और वे बच्चों को मूल बातें सिखाने के लिए अतिरिक्त समय लेते हैं ताकि बच्चों को उनके भविष्य में कोई समस्या न हो।

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादकः संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोनः 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)